ओ3म्

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

(नैक से 'A' ग्रेडप्राप्त एवं यूजीसी एक्ट 1956 के सैक्शन 3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

संस्कृतविभाग

CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

Vidyalankar (B.A. Sanskrit honours)

शिक्षा सत्र 2015- 16 से आरब्ध

स्नातकस्तरीय त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम

का

संशोधित स्वरूप

वर्ष 2019-20 से प्रभावी

विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स) पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स) स्नातक स्तरीय त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम है। समस्त विश्व का प्राच्यविद्यानिष्णात अधीती मनीषी विद्वान् इस तथ्य से सुपरिचित है कि संस्कृत-भाषा विश्व की सर्वोत्कृष्ट एवं अपनी शब्द-संरचना से कथ्य को स्पष्ट कर देने वाली सुपरिष्कृत भाषा है। इसे प्रायः समस्त भाषाओं की जननी के रूप में भी अभिषिक्त किया जाता है। इसका व्याकरण विश्व की भाषाओं में बेजोड़ है। इसमें विद्यमान विविध प्रकार का ज्ञानविज्ञान अनुपम एवं अद्वितीय है। इसमें उपलब्ध वाङ्मय का अध्ययन छात्रों को अध्यात्म की ऊँचाइयों को प्राप्त करवाने में जहाँ समर्थ है वहीं लौकिक धरा पर सर्वविध सौख्य का संवाहक भी। अतः गुरुकुलीय पृष्ठभूमि के अनुरूप छात्रों को नैतिकता का पाठ पढ़ाते हुए इस पाठ्यक्रम के द्वारा संस्कृतनिष्ठ ज्ञान-विज्ञान से उन्नत होने के लिए स्नातक स्तर पर सर्वजनहिताय एक उर्वरा भूमि तैयार करना इसका मूल उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम अध्ययन का परिणाम-

तीन वर्षों के इस पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार से किया गया है कि छात्र इसके अध्ययन से जहाँ संस्कृत भाषा में निश्चयेन वाचन, लेखन और सम्भाषण करने में प्रवीण होगा। वहीं निम्न बिन्दुओं के अनुसार विद्यार्थियों में परिणाम भी चरितार्थ होंगे ऐसा कहा जा सकता है। यथा-

- संस्कृतभाषा में निहित पद्य, गद्य, नीति आदि काव्यों के विविध स्वरूपों से वे परिचित होते हुए और तदनुरूप प्रगति करते हुए अपने भावी जीवन को खुशहाल बनाने में समर्थ होंगे।
- संस्कृतनिष्ठ प्राचीन वैज्ञानिक तथ्यों से सुपरिचित होंगे।
- प्राचीन इतिहास को जानने के लिए संस्कृतसाहित्य एक अत्युत्तम उपाय है, अतः उत्कीर्ण संस्कृत शिलालेखों के अध्ययन से प्राचीन भारत को अच्छे से समझ सकेंगे।
- आयुर्वेद प्राचीन भारत की स्वास्थ्य से सम्बन्धित धरोहर है,उसको जानकर अपने एवं अपने परिवार के जीवन मेंसुखसम्पदा लाने में समर्थ होंगे।
- समाज में उन्नत नैतिक मूल्यों के संवाहक हो सकेंगे।
- पाठ्यक्रम में पदे - पदे पढ़ाए जाने वाले जीवन के अन्तिम लक्ष्य से परिचित हो तदनुरूप जीवन-यापन करने से निश्चयेन हर प्रकार से निर्द्वन्द्व हो जी पायेंगे।

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

(नैक से 'A' ग्रेडप्राप्त एवं यूजीसी एक्ट 1956 के सैक्शन 3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

संस्कृतविभाग

CBCS आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

प्रथम वर्ष के दो सत्रों- प्रथम एवं द्वितीय का प्रारूप

विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स) का यह पाठ्यक्रम त्रिवर्षीय है। प्रथम वर्ष दो सत्रात्मक तथा प्रथम एवं द्वितीय सत्र के रूप में प्रायः छः छः मास का होगा। इसके अन्तर्गत प्रथम एवं द्वितीय दोनों सत्रों में चार-चार पत्रों अर्थात् कुल आठ पत्रों के अध्यापन की संकल्पना है। दोनों सत्रों में दो-दो पत्र संस्कृत विषय के होंगे और दो दो अन्य विषयों से। अन्य विषयों में प्रथम सत्र में **पर्यावरण विज्ञान** से सम्बद्ध एक पत्र होगा और दूसरा पत्र छात्र **वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि किसी भी एक विषय के (Generic Elective) GE के प्रश्न पत्रों में से** अपनी अभिरुचि के अनुसारचयन कर पढ़ने के लिए स्वतन्त्र होगा। इसी प्रकार द्वितीय सत्र में छात्र संस्कृत के दो पत्रों से अतिरिक्त **तृतीय पत्र अंग्रेजी का** और **चतुर्थ** पूर्ववत् अपनी अभिरुचि का पढ़ेगा। प्रत्येक पत्र का अधिभार कुल 100 अंक का होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06, 06 क्रेडिट का होगा। इन 100 अंकों में भी निर्धारित मानदण्डों के अनुसार प्रत्येक प्रश्न पत्र में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से होगा,जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 3, 3 घण्टे में देनें होंगे। एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा, इस प्रकार कुल मिलाकर दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×4×2 = 800 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×4×2 = 48 काहोगा।

द्वितीय वर्ष के दो सत्रों- तृतीय एवं चतुर्थका प्रारूप

त्रिवर्षीय इस पाठ्यक्रम का द्वितीय वर्ष भी दो सत्रात्मक तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र के रूपमेंसंकल्पित है।इनका भी प्रायः छः छः मास का काल है। इनके अन्तर्गत तृतीय एवं चतुर्थ दोनों सत्रों में पाँच-पाँच पत्र कुल 10 पत्रों की पाठ्यसामग्री निर्धारित है। एक अन्य विशेष अतिरिक्त पत्र भी **भारतीय ज्ञानपरम्परा** के नाम से तृतीय सत्र में अनिवार्यरूपेण विश्वविद्यालय की परम्परा के अनुरूप पढ़ने के लिए संयुक्त किया गया है। इस प्रकार **ग्यारह पत्रों** वाले इस वर्ष के पाठ्यक्रम में दोनों सत्रों में **तीन तीन** पत्र मुख्य पाठ्यक्रम से सम्बद्ध रखे गये हैं अर्थात् कुल छः पत्रों के अध्यापन की संकल्पना मुख्य विषयके अन्तर्गत है। प्रत्येक पत्र का अधिभार कुल 100 अंक का होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06, 06 क्रेडिट का होगा। इन 100 अंकों में भी निर्धारित मानदण्डों के अनुसार प्रत्येक प्रश्न पत्र में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से होगा, जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 3, 3 घण्टे में देनें होंगे। एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा। इस प्रकार मुख्य विषय केअन्तर्गत दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×3×2= 600 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×3×2 =36 काहोगा। इन छः पत्रों से अतिरिक्त दोनों सत्रों में ही **एक-एक** पत्र **कौशल अभिवृद्धि वैकल्पिक पाठ्यक्रम** (SkillEnhancement Elective Course) (SEC) के भी रखे गये हैं। इसके पत्रों का मूल्याङ्कन भी पूर्व पत्रों

की तरह 70+30 के आधार पर होगा। दोनों सत्रों के दोनों पत्रों के अंकों का योग 100×1×2 = 200 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 4×1×2=08 काहोगा।दोनों सत्रों में एक-एक पत्र प्रथम एवं द्वितीय सत्र के अनुरूप **Generic Elective** का पढ़ना होगा। जिसे छात्रों ने **वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि किसी भी एक विषय में से** अपनी अभिरुचि के अनुसार चुन कर गत वर्ष पढ़ा था।दोनों सत्रों के दोनों पत्रों के अंकों का योग 100×1×2= 200 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×1×2=12 का होगा। तृतीय सत्र में **भारतीय ज्ञानपरम्परा**पत्र का मूल्याङ्कन भी 70+30 के आधार पर 100 अंक का होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 04 क्रेडिट का होगा। इस प्रकार ग्यारह पत्रों का कुल अधिभार 1100 अंकों का एवं कुल क्रेडिट 60 होंगे।

तृतीय वर्ष के दो सत्रों- पञ्चम एवं षष्ठ का प्रारूप

त्रिवर्षीय इस पाठ्यक्रम का तृतीय वर्ष भी दो सत्रात्मक तथा पञ्चम एवं षष्ठ सत्र के रूप में संकल्पित है। इनका भी प्रायः छः-छः मास का काल है। इसके अन्तर्गत पञ्चम एवं षष्ठ दोनों सत्रों में चार-चार पत्रों अर्थात् कुल आठ पत्रों के अध्यापन की संकल्पना है। दोनों सत्रों में दो-दो पत्र अर्थात् कुल चार पत्र मुख्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं और दो-दो पत्र अर्थात् कुल चार पत्र विशिष्ट शिक्षण वैकल्पिक (DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE) (DSE) के अन्तर्गत पाठ्यविषय के रूप में निर्धारित किए गये हैं। प्रत्येक पत्र 100 अंक का होगा, जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 3 घण्टे में देनें होंगे। प्रश्न पत्र में निर्धारित मानदण्डों के अनुसार पूर्व वर्षों की तरह अंको के निर्धारण में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06 क्रेडिट का होगा, इस प्रकार कुल मिलाकर दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×4×2 = 800 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×4×2 = 48 का होगा।

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

(नैक से 'A' ग्रेडप्राप्त एवं यूजीसी एक्ट 1956 के सैक्शन 3 के अन्तर्गत समविश्वविद्यालय)

संस्कृतविभाग

CBCS आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

Vidyalankar (B.A. Sanskrit honours)

स्नातकस्तरीय पाठ्यक्रम

का

संक्षिप्त प्रारूप

संशोधित पाठ्यक्रम - 2019-20 से प्रभावी

प्रथम सत्र (Semester- Ist)

मुख्य पाठ्यक्रम (Core course)

A Core Course, which should compulsorily be studied by a candidate

Subject Code	पाठ्यक्रम शीर्षक Subject Title	Period Per Week		Evaluation Scheme			कुल अंक अधिभार	Credits
				सत्रीय मूल्याङ्कन (Sessional)		सत्रान्त परीक्षा (ESE)		
		L	T	CT	TA			
HSA- C111	संस्कृत-साहित्य (पद्य काव्य) Classical Sanskrit Literature (Poetry)	5	1	20	10	70	100	6
HSA- C112	संस्कृतसाहित्य का समालोचनात्मक सर्वेक्षण Critical Survey of Sanskrit Literature	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 200		कुल =12

Ability enhancement compulsory course(AECC) **An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.** **इसके अन्तर्गत सम्बद्ध विभाग से सम्पर्क कर छात्र निम्नलिखित पत्र का अध्ययन कर सकेंगे।**								
BEN- A101	Environmental science	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 100अंक		कुल =06
Generic Elective Papers (Any one) **An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.** **निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र को अन्य किसी भी विषय के छात्र चयन कर सकेंगे।**								
HSA-G111	आधारभूत संस्कृत Basic Sanskrit	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G112	भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक–समस्याएँ Indian Culture and Social Issues	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G113	संस्कृत एवं अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएँ Sanskrit and Other Modern Indian Languages	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 100 अंक		कुल = 06
नोट- संस्कृत ऑनर्स के छात्रों को वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि विषयों के GE के प्रश्न पत्रों में से अपनी अभिरुचि के अनुसार किसी एक पत्र का अनिवार्य रूप से चयन करना होगा।								
द्वितीय- सत्र (Semester- IInd) **मुख्य पाठ्यक्रम (Core course)** **A Core Course, which should compulsorily be studied by a candidate**								
HSA-C211	संस्कृत साहित्य (गद्य काव्य) Classical Sanskrit Literature (Prose)	5	1	20	10	70	100	6

HSA-C212	गीता में आत्मप्रबन्धन Self Management in Gita	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 200अंक		कुल =12
Ability enhancement compulsory course(AECC) **An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.** **इसके अन्तर्गत सम्बद्ध विभाग से सम्पर्क कर छात्र निम्नलिखित एक पत्र का अध्ययन कर सकेंगे।**								
BEG- A201	English communication	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 100अंक		कुल =06
Generic Elective Papers (Any one) **An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.** **निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र को अन्य विषय के छात्र चयन करेंगे ।**								
HSA-G211	संस्कृतसाहित्य **Sanskrit Literature**	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G212	भारतीयसौन्दर्यशास्त्र Indian Aesthetics	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G213	भारतीय दर्शन के मौलिक सिद्धान्त Fundamentals Of Indian Philosophy	5	1	20	10	70	100	6
						कुल = 100अंक		कुल =06
नोट- संस्कृत ऑनर्स के छात्र को वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि विषयों के GE के प्रश्न पत्रों में से अपनी अभिरुचि के अनुसारकिसी एक पत्र का अनिवार्य रूप से चयन करना होगा ।								
तृतीय सत्र (Semester IIIrd) **मुख्य पाठ्यक्रम (Core course)** **A Core Course, which should compulsorily be studied by a candidate**								
HSA-C311	शास्त्रीय संस्कृत साहित्य (नाटक) Classical Sanskrit	5	1	20	10	70	100	6

	Literature (Drama)							
HSA-C312	संस्कृत काव्यशास्त्र और साहित्यिक समीक्षा Sanskrit Poetics and Literary Criticism	5	1	20	10	70	100	6
HSA-C313	भारतीय सामाजिक संस्थाएँ और राजनीति Indian Social Institutions and Polity	5	1	20	10	70	100	6
							कुल =300 अंक	क्रेडिट 18
Skill Enhancement Elective Course (SEC) Any one **SEC-Courses value and skill based. This course aimed at providing hands on training, Competencies, Skills, etc** **निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र को संस्कृत ऑनर्स के छात्र एवं अन्य पाठ्यक्रमों के छात्र भी चयन कर सकते हैं।**								
HSA-S311	अभिनय एवं पटकथा लेखन Acting and Script Writing	3	1	20	10	70	100	4
HSA-S312	ब्राह्मीलिपि का अध्ययनकौशल Reading Skills in Brahmi Scripts	3	1	20	10	70	100	4
							कुल =100 अंक	क्रेडिट 04

Generic Elective Papers (Anyone) **An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.** **निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र का अन्य विषय के छात्र चयन करेंगे।**								
HSA-G311	प्राचीन भारतीय राजव्यवस्था Ancient Indian Polity	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G312	भारतीय पुरालेख एवं शिलालेख Indian Epigraphy & Paleography	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G313	संस्कृत हेतु कम्प्यूटर अनुप्रयोग Computer Applications For Sanskrit	5	1	20	10	70	100	6
							कुल = 100अंक	कुल =06
नोट- संस्कृत ऑनर्स के छात्र को वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि विषयों के GE के प्रश्न पत्रों में से अपनी अभिरुचि के अनुसार किसी एक पत्र का अनिवार्य रूप से चयन करना होगा।								
भारतीय ज्ञानपरम्परा (BKT) विशेष- तृतीय सत्र\चतुर्थ सत्र में इस पत्र को अतिरिक्त पत्र के रूप में विश्वविद्यालय के सभी विभागों के स्नातक स्तर के सभी छात्रों को पढ़ना अनिवार्य है। व्यावसायिक पाठ्यक्रम के छात्र इस पत्र को चतुर्थ में पढेंगे तथा अन्य सभी तृतीय सत्र में पढेंगे। इस प्रश्न-पत्र को प्राचीन भारतीय ज्ञान- विज्ञान से छात्रों को परिचित कराने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम में समाहित किया गया है।								
BKT-A301	**भारतीय ज्ञानपरम्परा** **Bharateeya Jnanaparampara**	**3**	**1**	**20**	**10**	**70**	**100**	**4**
							कुल =100 अंक	**कुल =4**

चतुर्थ सत्र (Semester-IVth)

मुख्य पाठ्यक्रम (Core Course)

A Core Course, Which should compulsorily be studied by a candidate

HSA-C411	भारतीय अभिलेख, प्राचीन लिपिविज्ञान एवं कालक्रम Indian Epigraphy, Paleography and Chronology	5	1	20	10	70	100	6
HSA-C412	आधुनिक संस्कृत साहित्य Modern Sanskrit Literature	5	1	20	10	70	100	6
HSA-C413	संस्कृत और विश्व साहित्य Sanskrit and world Literature	5	1	20	10	70	100	6
						कुल =300 अंक		कुल =18

Skill Enhancement Elective Course (SEC)

Any one SEC Course is value and skill based. This course aimed at providing hands on training, Competencies, Skills etc.

निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र को संस्कृत ऑनर्स के छात्र एवं अन्यपाठ्यक्रमों के छात्र भी चयन कर सकते हैं।

HSA-S411	मशीनी अनुवाद: उपकरण और तकनीक Machine Translation : Tools and Techniques	3	1	20	10	70	100	4
HSA-S412	भारतीय लिपियों का विकास Evolution of Indian Scripts	3	1	20	10	70	100	4
HSA-S413	संस्कृत छन्द और संगीत Sanskrit Meters and Music	3	1	20	10	70	100	4
							कुल =100 अंक	कुल

								=04

Generic Elective Papers (Any one)

An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.

निम्नलिखित पत्रों में से किसी भी एक पत्र को अन्य विषयों के छात्र चयन करेंगे। परन्तु संस्कृत ऑनर्स के छात्र वेद/दर्शन/प्राचीन भारतीय इतिहास/ राजनीति विज्ञान विषयक GE पत्र का अध्ययन करेंगे।

HSA-G411	भारतीय सामाजिक विचार में व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय Individual, Family and community In Indian Social Thought	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G412	राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य Nationalism and Indian Literature	5	1	20	10	70	100	6
HSA-G413	भारतीय स्थापत्य-प्रणाली Indian Architectural System	5	1	20	10	70	100	6
						कुल =100अंक		कुल =06

पञ्चम-सत्र (Semester-Vth)

मुख्य पाठ्यक्रम (Core Course)

A Core Course, Which should compulsorily be studied by a candidat

HSA-C511	**वैदिक साहित्य** Vedic Literature	5	1	20	10	70	100	6
HSA-C512	संस्कृत व्याकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी) Sanskrit Grammar (Laghusiddhantkaumudi)	5	1	20	10	70	100	6

						अंक - 200		क्रेडिट - 12
DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE (DSE) **any two Elective course may be offered by the main discipline/subject of study** **निम्नलिखित पत्रों में से किन्ही दो पत्रों को संस्कृत ऑनर्स के छात्र चयन कर सकते हैं।**								
HSA-E511	तर्क एवं वादविवाद की भारतीय पद्धति Indian System of Logic and Debate	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E512	सन्तुलित जीवन की कला Art of Balanced Living	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E513	संस्कृत में रंगमञ्च और नाट्यकला Theatre and Dramaturgy in Sanskrit	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E514	संगणकीय संस्कृत भाषा के लिये उपकरण एवं तकनीक Tools and Techniques for Computing Sanskrit Language	5	1	20	10	70	100	6
							कुल =200अंक	**कुल =12**
षष्ठ –सत्र (Semester-VIth) **मुख्य पाठ्यक्रम (Core Course)** **A Core Course, Which should compulsorily be studied by a candidate**								
HSA-C611	भारतीय सत्तामीमांसा और ज्ञानमीमांसा Indian Ontology and Epistemology	5	1	20	10	70	100	6
HSA-C612	संस्कृत लेखन एवं सम्प्रेषण Sanskrit Composition and Communication	5	1	20	10	70	100	6
							कुल अंक - 200	Credit - 12

DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE (DSE) any two Elective course may be offered by the main discipline/subject of study								
HSA-E611	संस्कृत भाषाविज्ञान Sanskrit Linguistics	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E612	संस्कृत के लिए संगणकीय भाषाविज्ञान Computational Linguistics for Sanskrit	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E613	आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त Fundamentals of Ayurveda	5	1	20	10	70	100	6
HSA-E614	संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता Environmental Awareness in Sanskrit Literature	5	1	20	10	70	100	6
							कुल = 200 अंक	**कुल = 12**

L= Lecture T= Tutorial CT = Cumulative Test TA= Teacher Assessment ESE -= End Semester Examination

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

संस्कृतविभाग

CBCS आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

पाठ्यक्रम के

प्रथम वर्ष के दो सत्रों- प्रथम एवं द्वितीय का प्रारूप

विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स) का यह पाठ्यक्रम त्रिवर्षीय है। प्रथम वर्ष दो सत्रात्मक तथा प्रथम एवं द्वितीय सत्र के रूप में प्रायः छः छः मास का होगा। इसके अन्तर्गत प्रथम एवं द्वितीय दोनों सत्रों में चार चार पत्रों अर्थात् कुल आठ पत्रों के अध्यापन की संकल्पना है। दोनों सत्रों में दो दो पत्र संस्कृत विषय के होंगे और दो दो अन्य विषयों से। अन्य विषयों में प्रथम सत्र में **पर्यावरण विज्ञान** से सम्बद्ध एक पत्र होगा और दूसरा पत्र छात्र **वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि किसी भी एक विषय के (Generic Elective) GE के प्रश्न पत्रों में से** अपनी अभिरुचि के अनुसार चुन कर पढने के लिए स्वतन्त्र होगा। इसी प्रकार द्वितीय सत्र में छात्र संस्कृत के दो पत्रों से अतिरिक्त **तृतीय पत्र अंग्रेजी का** और **चतुर्थ** पूर्ववत् अपनी अभिरुचि का पढेगा। प्रत्येक पत्र कुल 100, 100 अंक का होगा। इन 100 अंकों में भी निर्धारित मानदण्डों के अनुसार प्रत्येक प्रश्न पत्र में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से होगा, जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 3, 3 घण्टे में देनें होंगे। एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन अध्यापक के द्वारा आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06, 06 क्रेडिट का होगा, इस प्रकार कुल मिलाकर दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×4×2 = 800 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×4×2 = 48 का होगा।

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- प्रथम (Semester- I)

आधारभूत पत्र (Core paper)
Paper Code HSA-C111

संस्कृत-साहित्य (पद्य काव्य)
Classical Sanskrit Literature (Poetry)

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
क्रेडिट- 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड- क (Section-A)- रघुवंशमहाकाव्यम् (प्रथम सर्ग- श्लोक संख्या 1-40)

खण्ड- ख(Section-B)- कुमारसम्भवमहाकाव्यम् (पञ्चम सर्ग- श्लोक संख्या 1-30)

खण्ड- ग(Section-C)- किरातार्जुनीयमहाकाव्यम् (प्रथम सर्ग- श्लोक संख्या 1-25)

खण्ड- घ(Section-D) - नीतिशतकम् (प्रथम 1-50 श्लोक)

खण्ड- ङ(Section-E) - महाकाव्य एवं गीतिकाव्य की उत्पत्ति और विकास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थी को क्लासिकल अर्थात् शास्त्रीय संस्कृत पद्य की जानकारी देना है। इसका मन्तव्य साहित्य की ऐसी समझ प्रदान करना है, जिससे कि विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के विकास को समझ सकेंगे। पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य यह भी है कि छात्र भाषा का प्रयोग सम्यक् रूप से करने में समर्थ हो सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्र संस्कृत पद्य रचना की प्रवृत्ति एवं सिद्धान्तों से परिचित हो जायेगा।
2. संस्कृतभाषा के संरचनात्मक भाषावैशिष्ट्य से परिचित हो भाषा के प्रयोग में सफल होगा।
3. नैतिक मूल्यों में श्रीवृद्धि होगी, जिससे समाज में एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में पहचाना जायेगा।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

रघुवंशमहाकाव्यम्(प्रथम सर्ग- श्लोक संख्या 1-40)

घटक (Unit) –1(क) परिचय-कवि एवं कृति **(ख)** प्रथम सर्ग- विषयवस्तु

घटक(Unit)–2(क) व्याकरणात्मक-विश्लेषण,श्लोकों का अनुवाद एवं स्पष्टीकरण (व्याख्या)

(ख) विषय का विश्लेषणात्मक सारांश **(ग)** चरित्र-चित्रण

खण्ड –ख (Section–B)

कुमारसम्भवमहाकाव्यम् (पञ्चम सर्ग- श्लोक संख्या 1-30)

घटक (Unit) –1(क) परिचय-कवि एवं कृति

(ख)पञ्चम सर्ग की विषयवस्तु और पृष्ठभूमि

(ग) व्याकरणात्मक-विश्लेषण, श्लोकों का अनुवाद एवं स्पष्टीकरण (व्याख्या)

घटक (Unit) –2(क) कवि की काव्यात्मक विशिष्टता तथा कथावस्तु- योजना **(ख)** पार्वती की तपस्या

खण्ड–ग (Section–C)

किरातार्जुनीयमहाकाव्यम् (प्रथम सर्ग- श्लोक संख्या 1-25)

घटक (Unit)-1(क) परिचय-कवि एवं कृति

(ख) प्रथम सर्ग की विषयवस्तु और पृष्ठभूमि

(ग) व्याकरणात्मक-विश्लेषण, श्लोकों का अर्थ एवं अनुवाद, स्पष्टीकरण (व्याख्या)

घटक (Unit) –2(क) कवि की काव्यात्मक विशिष्टता

(ख) विषयपरक विश्लेषण

खण्ड–घ (Section–D)

नीतिशतकम् (प्रथम 1-50 श्लोक)

घटक (Unit)-1 नीतिशतकम् काव्य का व्याकरणात्मक-विश्लेषण, श्लोकों का अनुवाद एवं स्पष्टीकरण (व्याख्या)

घटक (Unit)-2 (क) कवि की काव्यात्मक विशिष्टता तथा विषयपरक विश्लेषण

(ख) भर्तृहरि के नीतिशतकगत सामाजिक समीक्षा

खण्ड–ङ (Section–E)

महाकाव्य एवं गीतिकाव्य की उत्पत्ति और विकास

घटक (Unit)-1 विविध-महाकाव्यों की उत्पत्ति और विकास – अश्वघोष, कालिदास, भारवि, माघ, भट्टि तथा श्रीहर्ष के विशेष सन्दर्भ में।

घटक (Unit)-2 संस्कृत-गीतिकाव्यों की उत्पत्ति और विकास- कालिदास, बिल्हण, जयदेव, अमरूक तथा भर्तृहरि के विशेष सन्दर्भ में।

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. C.R. Devadhar (Ed.), Raghuvansham of Kalidasa, MLBD. Delhi.
2. M.R. Kale (Ed.), Raghuvansham of Kalidasa,MLBD, Delhi.
3. Gopal RaghunathNandargikar (Ed.), Raghuvansham of Kalidasa, MLBD, Delhi.
4. कृष्णमणि त्रिपाठी, रघुवंशम्(मल्लिनाथकृत सञ्जीवनीटीका), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. नेमिचन्द्र शास्त्री, कुमारसम्भवम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6.M.R. Kale (Ed.), Kumarasambhavam, MLBD, Delhi.
7. समीर शर्मा, मल्लिनाथकृत घण्टापथटीका, भारविकृत किरातार्जुनीयम्, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
8. जनार्दन शास्त्री, भारवि कृत किरातार्जुनीयम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
9. M.R. Kale (Ed.), Kiratarjuneeyam of Bharavi, MLBD, Delhi.
10. M.R. Kale (Ed.), Neetishatakam of Bhartṛhari, MLBD., Delhi.
11. विष्णुदत्त शर्मा शास्त्री(व्या.), भर्तृहरिकृत नीतिशतकम्, विमलचन्द्रिकासंस्कृतटीका व हिन्दी- व्याख्यासहित, ज्ञानप्रकाशन, मेरठ, संवत् 2034.
12. तारणीश झा. रामनारायणलाल बेनीमाधव(व्या.), संस्कृतटीका, हिन्दी व अंग्रेजीव्याख्या अनुवादसहित, इलाहाबाद, 1976.
13. मनोरमा हिन्दी-व्याख्या सहित, (व्या.) ओमप्रकाश पाण्डये, भर्तृहरि कृत नीतिशतकम्, चौखम्बाअमरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1982
14. बाबूराम त्रिपाठी(सम्पा.), भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् महालक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 1986!
15. Mirashi, V.V. :Kalidasa, Popular Publication, Mumbai.
16. Keith, A.B.: History of Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
17. Krishnamachariar :History of Classical Sanskrit Literature, MLBD, Delhi
18. GaurinathSHSAtri : A Concise History of Sanskrit Literature, MLBD, Delhi
19. Winternitz, Maurice: Indian Literature (Vol. I-III), also Hindi Translation, MLBD, Delhi.

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- प्रथम (Semester –I)

आधारभूत पत्र (Core paper)
Paper–HSA-C112

संस्कृतसाहित्य का समालोचनात्मक सर्वेक्षण
Critical Survey of Sanskrit Literature

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
क्रेडिट- 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section-A) - वैदिकसाहित्य
खण्ड- ख (Section-B) - वाल्मीकि - रामायण
खण्ड- ग (Section-C) - महाभारत
खण्ड- घ (Section-D)- पुराण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम छात्रों को संस्कृत साहित्य के विकास क्रम की यात्रा से परिचित कराता है जिसकी सीमा वैदिक साहित्य से लेकर पुराण साहित्य तक है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न शास्त्रीय पद्धतियों की रूपरेखा से अवगत कराता है जिसके माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य और शास्त्र की विभिन्न पद्धतियों को जान सकेंगे।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रमके अध्ययन से छात्रों को संस्कृतसाहित्यगत विपुल वाङ्मय की जानकारी होगी।
2. साहित्यगत उदात्त भावनाओं के अध्ययन का भी निश्चितरूपेण जीवन पर प्रभाव होगा जिससेवे समाज के लिए उपयोगी होंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A) वैदिकसाहित्य

घटक (Unit)-1(क) वैदिकसंहिताओं (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद) का रचना काल एवं विषय-वस्तु।

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुसार)

(ख) वेदों में निहित धर्म और दर्शन का स्वरूप (महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुसार वेदोक्त धर्म विषय, उपासनाविषय एवं आकर्षणानुकर्षण विषय)

घटक (Unit)-2 ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा वेदाङ्ग का संक्षेप में परिचयात्मक अध्ययन

खण्ड-2 (Section-B)

वाल्मीकि–रामायण

घटक (Unit)-1 वाल्मीकि - रामायण का रचना काल, विषय- वस्तु तथा आदिकाव्यत्व ।

घटक (Unit)-2 वाल्मीकि - रामायण का सांस्कृतिक महत्त्व (शिक्षा का स्वरूप, पारिवारिक स्वरूप, सदाचार, स्त्री सम्मान)।

खण्ड-3 (Section-C)

महाभारत

घटक (Unit)-1 महाभारत का रचनाकाल, विकास एवं विषय-वस्तु।

घटक (Unit)-2 महाभारत का विश्वज्ञानकोषस्वरूप, यक्षयुधिष्ठिर संवाद का महत्त्व, तप का स्वरूप एवं महत्त्व, पर्यावरण-चेतना, वर्णाश्रमधर्म।

खण्ड-4 (Section-D)

पुराण

घटक (Unit)-1 पुराणों की विषय- वस्तु एवं लक्षण।

घटक (Unit)-2 पुराणों का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व।

संस्तुतग्रन्थाः

1.स्वामी दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, परोपकारिणी सभा, अजमेर
2.बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी,
3. बलदेव उपाध्याय, वैदिक साहित्य और संस्कृति, वाराणसी
4. बलदेव उपाध्याय,पुराण विमर्श
5. प्रीतिप्रभा गोयल, संस्कृतसाहित्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर.
6. उमाशंकर शर्मा ऋषि, संस्कृतसाहित्य का इतिहास, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
7. राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8.A.B. Keith,History of Sanskrit Literature, also Hindi translation, MLBD, Delhi. (हिन्दी अनवुाद, मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली).
9. M. Krishnamachariar, History of Classical Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
10. GaurinathSHSAtri, A Concise History of Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
11. Maurice Winternitz, Indian Literature (Vol. 1-2I), also Hindi Translation, MLBD, Delhi.

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये CBCS के अन्तर्गतविस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Generic Elective (GE) Course for Sanskrit

(विश्वविद्यालय के संस्कृत विषय से भिन्न छात्रों हेतु पाठ्यक्रम)

सत्र- प्रथम (Semester- 1)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय | **आधारभूत संस्कृत** | **पूर्णाङ्क -100**
Generic Elective (GE) | **Basic Sanskrit** | **सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper–HSA – G111 | | **आन्तरिक परीक्षा-30**
| | **सकल-अर्जिताधिभार 06**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क(Section-A) संस्कृत-व्याकरण
खण्ड- ख (Section-B) संस्कृत-व्याकरण
खण्ड- ग (Section-C) अपरीक्षितकारक (पञ्चतन्त्र)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का निर्माण विश्वविद्यालय के संस्कृतेतरछात्र, जो संस्कृत पढ़ने के इच्छुक हैं, लेकिन जिन्होंने अभी तक संस्कृत भाषा का अध्ययन नहीं किया है या बहुत ही कम किया है, उनके लिए किया गया है, जिससे वे संस्कृतभाषा की सामान्य जानकारी प्राप्त कर सकें।साथ ही मानव की कथा में विशेष प्रवृत्ति को देखते हुए कथासाहित्य के माध्यम से नैतिकमूल्यों को प्रदान करना भी इस पत्र का उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से वे छात्र लाभान्वित होंगे, जो संस्कृत सर्वथा आरम्भ से सीखना चाहते हैं।
2. छात्र संस्कृत की वाक्यसंरचना की वैज्ञानिकता को अपनी बौद्धिक क्षमता में स्थान दे सकेंगे।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड- (Section-A)

संस्कृत-व्याकरण

घटक- क (Unit-1) शब्द-रूप - सर्वनाम- शब्द- अस्मद्, युष्मद्, एतद्, तत्, यत्,किम् **(इनके तीनों लिङ्गों में)**

घटक - ख (Unit-2) शब्द-रूप -राम, हरि, गुरु, पितृ, फल, मधु, लता, मति, नदी

घटक - ग (Unit-3) शब्द-रूप - भवत्, ज्ञान, वाक्

खण्ड- (Section–2)

संस्कृत-व्याकरण

घटक क (Unit–1) धातु- रूप- लट्, लङ्, लोट् तथा लृट् चारों लकारों में धातुरूप- पठ्, खाद्, लिख्, कृ, श्रु, दा, ज्ञा

घटक ख (Unit–2) धातु- रूप - लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् तथा लृट् पाँच लकारों में धातुरूप -आत्मनेपद – एध्, सेव्, लभ्

घटक ग (Unit–3) कारक (विभक्ति-प्रकरण)

घटक घ(Unit–4) सन्धि प्रकरण एवं प्रत्यय

(क) स्वर (यण्, गुण, अयादि, सवर्णदीर्घ)

(ग) सामान्य हिन्दी वाक्यों का (खण्ड -1 के शब्दरूपएवं खण्ड 2 के प्रथम एवं द्वितीय घटक के धातुरूप के आधार पर) **संस्कृत अनुवाद**

खण्ड- ग (Section-C) अपरीक्षितकारक (पञ्चतन्त्र)

घटक क (Unit–1) अपरीक्षितकारक की प्रारम्भिक दों कथाएं

संस्तुतग्रन्थाः

1. प्रारम्भिकरचनानुवाद कौमुदी, डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी
2. अनुवाद चन्द्रिका, चक्रधर नौटियाल

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- द्वितीय (Semester –II)

आधारभूत पत्र (Core paper) | **संस्कृत-साहित्य (गद्य काव्य)** | **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code – HSA-C211 | **Classical Sanskrit Literature (Prose)** | **सत्रान्त परीक्षा -70**

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड- क (Section-A) - शुकनाशोपदेश

खण्ड- ख (Section-B) - शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास)

खण्ड- ग (Section-C)- संस्कृत- गद्यकाव्य की उत्पत्ति और विकास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को संस्कृत के शास्त्रीय गद्य से परिचित कराते हुए संस्कृत गद्य के उद्भव और विकासकी पूर्ण जानकारी देना है। साथ ही सुललित गद्य की विधा से परिचित करवाते हुए संस्कृत उपन्यास भी इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है ताकि विद्यार्थी संस्कृत गद्य की उत्कृष्ट परम्परा से परिचित हो सकें। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों को स्वतन्त्र रूप से संस्कृत रचना करने औरसमझने में भी सहायता मिलेगी।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रसंस्कृतगद्य की विभिन्न विधाओं से परिचित हो सकेंगे।
2. संस्कृत की वाक्यरचना करने में प्रावीण्य भी आयेगा।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड- (Section – A)
शुकनासोपदेश

घटक-क (Unit) –1 परिचय-कवि एवं कृति

घटक- ख (Unit) –2 (क) शुकनासोपदेश में चित्रितसमाज, धनमदजन्यदोष तथा राजनीतिकतत्त्व

(ख) बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्, वाणी बाणो बभूव, पञ्चाननो बाणः आदि की तर्कसंगतता।

खण्ड- (Section – B)
शिवराजविजय (प्रथम नि:श्वास)

घटक (Unit) –1 (क) परिचय-कवि एवं कृति तथा काल-निर्धारण

(ख) व्याकरणात्मक-विश्लेषण, अनुवाद एवं स्पष्टीकरण (व्याख्या)

घटक (Unit-2 (क) कवि की काव्यात्मक विशिष्टता, विषयपरक विश्लेषण

(ख) शिवराजविजय के प्रथम निःश्वास में समाज, अम्बिकादत्त व्यास की भाषाशैली, प्रकृतिचित्रण एवं वैशिष्ट्य

खण्ड- (Section – C)
संस्कृत- गद्यकाव्य की उत्पत्ति और विकास

घटक (Unit) –1 (क) गद्यकाव्य की उत्पत्ति और विकास

(ख) प्रेमाख्यान एवं नीतिकथा सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण गद्यकाव्य

घटक (Unit-2) (क) सुबन्धु, दण्डी, बाण, अम्बिकादत्त व्यास

(ख) पञ्चतन्त्र, हितोपदेश, वेतालपञ्चविंशतिका

संस्तुत ग्रन्थ

1. प्रहलाद कुमार, मेहरचन्द लछमनदास, शुकनासोपदश, दिल्ली
2. रामपाल शास्त्री, शुकनासोपदश, सुबोधिनी संस्कृत (हिन्दी व्याकरण), चौखम्बा ओरेन्टलिया, वाराणसी
3. रमाकान्त झा,शुकनासोपदश, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
4. शिवराजविजय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
5. शिवराजविजय, साहित्यभण्डार, मेरठ
6. बलदेव उपाध्याय : संस्कृतसाहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी
7. प्रीतिप्रभा गोयल : संस्कृतसाहित्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
8. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि' :संस्कृतसाहित्य का इतिहास, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
9. राधावल्लभ त्रिपाठी: संस्कृतसाहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. A.B. Keith: History of Sanskrit Literature, also Hindi translation, MLBD, Delhi.हिन्दी अनुवाद, मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
11. M. Krishnamachariar : History of Classical Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
12. GaurinathSHSAtri: A Concise History of Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
13. Maurice Winternitz : Ancient Indian Literature (Vol. 1-2I), also Hindi Translation, MLBD, Delhi.

Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed.

विद्यालङ्कार(B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- द्वितीय (Semester –II)

आधारभूत पत्र (Core paper) | **गीता में आत्मप्रबन्धन** | **पूर्णाङ्क -100**
Paper Code – HSA-C212 | **Self Management in the Gita** | **सत्रान्त परीक्षा -70**
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section– A) श्रीमद्भगवद्गीता : ज्ञानात्मक और भावात्मक साधन
खण्ड- ख (Section– B) श्रीमद्भगवद्गीता : मनोनियन्त्रण
खण्ड- ग (Section– C) श्रीमद्भगवद्गीता : भक्ति (उपासना) के माध्यम से आत्मनियन्त्रण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का प्रयोजन गीता में प्रतिपादित आत्मानुशासन दर्शन का अध्ययन कराना है। यह पाठ्यक्रम छात्रों को पारम्परिक व्याख्यान से अलग स्वयं के अनुभव के आधार पर अनुशासन को समझने तथा सीखने की सामर्थ्य प्रदान करता है तथा गीता के महात्म्य से परिचित कराता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र गीता के माध्यम सेआत्मनियन्त्रण का पाठ पढ़ कर सुखी जीवनचर्या को प्राप्त कर पायेंगे।
2. जीवन निर्द्वन्द्व होगा,समय समय पर उत्पन्न होने वाले कामुकता, क्रोध आदि विकारों पर नियन्त्रण कर पायेंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)
श्रीमद्भगवद्गीता : ज्ञानात्मक और भावात्मक साधन

घटक (Unit) –1 इन्द्रिय, मनस्, बुद्धि और आत्मन् का अनुक्रम (3.42 तथा 15.7), आत्मा की भूमिका (15.7,9) प्रकृति का परिणाम मन 7.4
सत्व, रजस् और तमस् गुणों का धर्म तथा इनका मन पर प्रभाव - अध्याय – 13.5,6, 14.5-8, 11-13, 14.17

खण्ड-ख (Section – B)
श्रीमद्भगवद्गीता : मनोनियन्त्रण

मनोनियन्त्रण-
घटक (Unit) –1 द्वन्द्व की प्रकृति- (1.1; 4.16; 1.45; 2.6)
कारणात्मक- अभिकर्ता :- अज्ञान 2.41, इन्द्रिय 2.60, मन 2.67, रजोगुण 3.36-39, 16.21; मन की दुर्बलता- 2.3, 4.5।
घटक (Unit-2) मन के नियन्त्रण के उपाय-
(I) ध्यान की कठनाईयाँ- 6.34, 35।
(II) **क्रियाविधि-** 6.11-14
(III) **सन्तुलित-जीवन-** 3.8, 6.16-17
(IV) **आहार-नियन्त्रण-** 17.8-10

(V) **शारीरिक एवं मानसिक अनुशासन** 17.14-19**;** 6.36
घटक (Unit-**3) द्वन्द्वसमाधान के कारक**
(I) ज्ञान का महत्त्व- 2.52**;** 4.38-39
(II) बुद्धि की शुद्धता18.30-32
(III) निर्णय लेने की प्रक्रिया- 18.63
(IV) इन्द्रिय नियन्त्रण 2.59,64
(V) कर्त्तृभाव का त्याग 18.13-16**;** 5.8,9
(VI) **निष्काम-भाव 2.**48,55
(VII) **अनासक्तभाव** 3.25

खण्ड-ग (Section – C) श्रीमद्भगवद्गीता : भक्ति (उपासना) के माध्यम से आत्मनियन्त्रण
घटक (Unit) –1 (1) अहंकार का त्याग- 2.7,47; 9.27; 8.7; 11.55
(2) निरर्थक वाद-विवादों का परित्याग- 7.21; 4.11; 9.26
(3) नैतिक-गुणों की प्राप्ति- 12**.**11,13-19

संस्तुतग्रन्थाः
1. श्रीमद्भगवद्गीता **—** मधुसूदनसरस्वतीकृत गूढ़ार्थदीपिका संस्कृतटीका तथा प्रतिभाभाष्य (हिन्दी)सहित**,**
2. श्रीमद्भगवद्गीता**,** व्याख्याकार **—** मदनमोहन अग्रवाल**,** चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान**,** वाराणसी**,** 1994.
3. श्रीमद्भगवद्गीता **—** एस0 राधाकृष्णन् कृत व्याख्या का हिन्दी अनुवाद**,** राजपाल एण्ड सन्स**,** दिल्ली**,** 1969.
4. श्रीमद्भगवद्गीतारहस्य और कर्मयोगशास्त्र **—** बालगङ्गाधर तिलक**,** अपोलो प्रकाशन**,** दिल्ली**,** 2008.
5. SHrimadbhagavadgeeta - English commentary by JayadayalGoyandka, Tattvavivecinee Geeta Press, Gorakhpur, **1997.**
6. SHrimadbhagavadgeetaraHSAya - The Hindu Philosophy of Life, Ethics andorKarmayogasHSAtra Religion, Original Sanskrit Stanzas with EnglishTranslation, Bal Gangadhar Tilak &Balchandra Sitaram Sukthankar,J.S.Tilak&S.S.Tilak, **1965.**
7. SHrimadbhagavadgeeta - A Guide to Daily Living, English translation and notes by Pushpa Anand, Arpana Publications, **2000.**
8. SHrimadbhagavadgeeta - The Scripture of Mankind, text in Devanagari with transliteration in English and notes by Swami Tapasyananda, Sri Ramakrishna Math, **1984.**
9. Chinmayananda - The Art of Man Making (**114** short talks on theBhagavadgeeta), Central Chinmaya Mission Trust,Bombay, **1991.**
10. Panchamukhi, V.R.- Managing One-Self (SHrimadbhagavadgeeta : Theory and Practice), R.S. Panchamukhi Indological Research Centre, New Delhi&AmarGrantha Publications, Delhi, **2001.**
11. Sri Aurobindo - Essays on the Geeta, Sri Aurobindo Ashram,a. Pondicherry,**1987.**
12. Srinivasan, N.K. - Essence of SHrimadbhagavadgeeta : Health & Fitness (commentary on selected verses), Pustak Mahal, Delhi, **2006.**
Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed.

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

Ability enhancement compulsory course (AECC)

An elective Course Chosen generally from an unrelated discipline/ Subject.

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the AECCCourse (MIL) for Sanskrit

सत्र- द्वितीय (Semester-II)

आधारभूत पत्र (Core paper)

Paper Code – HSA- G211

संस्कृतसाहित्य

Sanskrit Literature

पूर्णाङ्क -100

सत्रान्त परीक्षा -70

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section-A) हितोपदेश

खण्ड-ख (Section-B) चाणक्यनीति

खण्ड-ग (Section-C) संस्कृतगद्य एवं नीतिकाव्य का इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य–इस पत्र का उद्देश्य छात्रों को संस्कृतसाहित्य के रूपरेखा से परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम –अध्ययन परिणाम (Course Outcomes)-

1. इस पत्र के अध्ययन से छात्र गद्यसाहित्य को जानेंगे।
2. तत्प्रतिपादित जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त करेंगे।

खण्डारूपविभाजनम् -

खण्ड -क (Section-A)

हितोपोदेश: मित्रलाभ की प्रथम दो कहानियाँ

घटक : 1 प्रस्तावना, प्रथम कथा (अनुवाद, व्याख्या एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी)

घटक : 2 द्वितीय कथा (अनुवाद, व्याख्या एवं व्याकरणात्मक टिप्पणी)

खण्ड -ख (Section-B)

चाणक्यनीति

घटक : 1 चाणक्यनीति (श्लोक : 1-50) अनुवाद, व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

खण्ड-ग (Section-C)

संस्कृतगद्य एवं नीतिकाव्य का इतिहास

घटक : 1 गद्य एवं नीतिकाव्य की उत्पत्ति एवं विकास(सुबन्धु, दण्डी, बाण, अम्बिकादत्त व्यास, विष्णुदत्त शर्मा, पं0 नारायण शर्मा)

घटक : 2 कथासरित्सागर ,पञ्चतन्त्र, हितोपदेश तथा चाणक्यनीति (सामान्य परिचय)

प्रस्तवित पुस्तकें -

1. पण्डित जीबानन्द विद्यासागर ,हितोपदेश ,सरस्वती प्रेस कलकत्ता।
2. श्रीलाल उपाध्याय (अनुवादक) चाणक्यनीतिदर्पण,बैजनाथ प्रसाद बुक सेलर,बनारस ,1952।

3. बलदेव उपाध्याय,संस्कृत साहित्य का इतिहास ,शारदा निकेतन,बाराणसी।
4. उमाशंकर शर्मा ऋषि , संस्कृत साहित्य का इतिहास , चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी।
5. राधावल्लभ त्रिपाठी , संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास , विश्वविद्यालय प्रकाशन , वाराणसी।
6. ए.बी . कीथ संस्कृत साहित्य का इतिहास (हिन्दी अनुवाद, मंगलदे शास्त्री , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)
7. Gourinath shastri, A Concis history of Sanskrit Literature,MLBD,Delhi

विद्यालङ्कार (बी0ए0 संस्कृत ऑनर्स)
संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
Generic Elective (GE) Course
द्वितीय सत्र (Semester –II)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय	**भारतीयदर्शन के मौलिक सिद्धान्त**	**पूर्णाङ्क -100**
Generic Elective (GE)	**Fundamentals of Indian**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper–HSA– G213	**Philosophy**	**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section-A) भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय
खण्ड-ख (Section-B) भारतीय दर्शन की शाखाएँ
खण्ड-ग (Section -3) भारतीय दर्शन के उपपाद्य विषय

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय दर्शन के सामान्य ज्ञान से अवगत कराना है। इसका एक उद्देश्य यह भी है कि विद्यार्थी भारतीय दर्शन के प्रारम्भिक पहलुओं को समझ सकें और संस्कृत में लिखे गए दर्शन सम्बन्धी ग्रन्थों को समझ सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रभारतीय दर्शन की विविध विधाओं से परिचित हो जायेंगे।
2. कर्म आदि के सिद्धान्तों का जानकर जीवन में उनका बीजारोपण कर अपने को सफल कर पाने में समर्थ होंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -A)
भारतीय दर्शन का सामान्य परिचय
(दर्शन के मूलसिद्धान्त)

घटक-क (Unit–1) दर्शन: संकल्पना एवं उद्देश्य
घटक-ख (Unit–2) भारतीयदर्शन की शाखाओं का वर्गीकरण, भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ

खण्ड-ख (Section -B)
भारतीय दर्शन की शाखाएँ

घटक-क (Unit–1) (क) नास्तिक दर्शन : चार्वाकदर्शन – सामान्य परिचय, वेदविरोधी मान्यताएँ, भावातीत सत्ता (परमसत्ता) का खण्डन, आचारनीति (सर्वदर्शन संग्रह के आधार पर)
(ख) जैनदर्शन : सामान्यपरिचय, अनेकान्तवाद, स्यादवाद, सप्तभङ्गीन्याय, त्रिरत्न
(ग) बौद्धदर्शन: सामान्य परिचय, चार आर्य सत्य
घटक (Unit–2) आस्तिक दर्शन **(क)** साङ्ख्यदर्शन : सामान्य परिचय, प्रकृति और पुरुष, गुणत्रय (साङ्ख्यकारिका के आधार पर)
(ख) योगदर्शन : अष्टाङ्ग योग (योगसूत्र के साधनपाद के आधार पर)
घटक (Unit–3) न्याय और वैशेषिक : सामान्य परिचय और सप्त पदार्थ (तर्कसंग्रह के आधार पर)
घटक (Unit–4) अद्वैत वेदान्त : सामान्य परिचय, ब्रह्म, माया, जीव, जगत् (वेदान्तसार के आधार पर)
घटक (Unit–5) मीमांसा: स्वतःप्रामाण्यवाद
घटक (Unit–6) भक्तिवेदान्त: सामान्य परिचय, ब्रह्म, ईश्वर और प्रकृति की भक्ति

खण्ड-ग (Section-C)

भारतीय दर्शन के उपपाद्य विषय

घटक-क (Unit–1) (क) ज्ञानमीमांसा : षट् प्रमाण

(ख) तत्त्वमीमांसा: यथार्थवाद, आदर्शवाद, कार्य-कारण सम्बन्ध –सत्कार्यवाद, असत्कार्यवाद, प्रामाण्यवाद, विवर्त्तवाद, स्वभाववाद, चेतना एवं पदार्थ

(ग) आत्ममीमांसा

घटक-ख (Unit–2) आचारनीति (नीतिशास्त्र) : कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त, मोक्ष

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. Bhartiya, Mahesh - BhāratīyaDarśanaKīPramukhaSamasyāeṁ, Ghaziabad, 1999.
2. Chatterjee, S. C. & D. M. Datta - Introduction to Indian Philosophy, Calcutta University, Calcutta, 1968 (Hindi Translation also) .
3. Chatterjee, S. C. – The Nyāya Theory of Knowledge, Calcutta, 1968.
4. Hiriyanna, M. - Outline of Indian Philosophy, London, 1956 (also Hindi Translation) .
5. SHSAtri, Kuppuswami, A Primer of Indian Logic, 1951 (only introduction) .
6. Bhartiya, Mahesh - Causation in Indian Philosophy, Ghaziabad, 1975.
7. O'Flaherty, Wendy Doniger – Karma and Rebirth in Classical Indian Tradition, MLBD, Delhi, 1983.
8. Pandey, Ram Chandra - Panorama of Indian Philosophy (also Hindi version), M.L.B.D., Delhi, 1966.
9. Radhakrishnan, S. - Indian Philosophy, Oxford University Press, Delhi, 1990.
10. Raja, Kuhnan - Some Fundamental Problems in Indian Philosophy, MLBD, Delhi, 1974.
11. Rishi, Uma Shankar (Ed.), Sarva-Darshana_Samgraha, ChowkhambaVidyabhawan, Varansi, 1984.

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

संस्कृतविभाग

CBCS आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

पाठ्यक्रम के

द्वितीय वर्ष के दो सत्रों-तृतीय एवं चतुर्थका प्रारूप

त्रिवर्षीय इस पाठ्यक्रम का द्वितीय वर्ष भी दो सत्रात्मक तथा तृतीय एवं चतुर्थ सत्र के रूप में संकल्पित है। इनका भी प्रायः छः छः मास का काल है। इनके अन्तर्गत तृतीय एवं चतुर्थ दोनों सत्रों में पाँच पाँच पत्र कुल 10 पत्रों की पाठ्यसामग्री निर्धारित है। एक अन्य विशेष पत्र भी **भारतीय ज्ञानपरम्परा** के नाम से तृतीय सत्र में अनिवार्यरूपेण विश्वविद्यालय की परम्परा के अनुरूप पढ़ने के लिए संयुक्त किया गया है। इसप्रकार **ग्यारह पत्रों** वाले इस वर्ष के पाठ्यक्रम में दोनों सत्रों में **तीन तीन** पत्र मुख्य पाठ्यक्रम से सम्बद्ध रखे गये हैं अर्थात् कुल छः पत्रों के अध्यापन की संकल्पना मुख्य विषय के अन्तर्गत है। प्रत्येक पत्र कुल 100, 100 अंक का होगा। 100 अंकों का विभाजन भी परीक्षक द्वारा निर्धारित मानदण्डों के अनुसार प्रत्येक प्रश्न पत्र में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से होगा, जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर तीन तीन घण्टे में देनें होंगे। एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन अध्यापक के द्वारा आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06, 06 क्रेडिट का प्रत्येक पत्र होगा, इसप्रकार कुल मिलाकर दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×3×2 = 600 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×3×2 =36 काहोगा। छः पत्रों से अतिरिक्त दोनों सत्रों में ही **एक एक** पत्र **कौशल अभिवृद्धि वैकल्पिक पाठ्यक्रम**(SkillEnhancement Elective Course) (SEC) के भी रखे गये हैं।इसके पत्रों का मूल्याङ्कन भी पूर्व पत्रों की तरह 70+30 के आधार पर होगा। दोनों सत्रों के दोनों पत्रों के अंकों का योग 100×1×2 = 200 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 4×1×2 =08 का होगा। दोनों सत्रों में एक एक पत्र प्रथम एवं द्वितीय सत्र के अनुरूप **Generic Elective** का पढ़ना होगा।जिसे छात्रों ने **वेद/दर्शन/योग/प्राचीन भारतीय इतिहास/राजनीति विज्ञान आदि किसी भी एक विषय में से** अपनी अभिरुचि के अनुसार चुन कर गत वर्ष पढा था। दोनों सत्रों के दोनों पत्रों के अंकों का योग 100×1×2 = 200 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×1×2 =12 काहोगा। तृतीय सत्र में **भारतीय ज्ञानपरम्परा** के नाम से अतिरिक्त एवं अनिवार्य पाठ्यक्रम की रूपरेखा भी विश्वविद्यालय की गरिमा के अनुसार निर्धारित है। इस पत्र का मूल्याङ्कन भी 70+30 के आधार पर 100 अंक का होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 04 क्रेडिट का होगा।

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-तृतीय (Semester- 3)

आधारभूत पत्र (Core paper) | शास्त्रीय संस्कृत साहित्य (नाटक) | **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code HSA – C311 | **Classical Sanskrit Literature (Drama)** | **सत्रान्त परीक्षा -70**
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार- 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section- A) महाकविभास-स्वप्नवासवदत्तम् (नाटक) अंक : 1, 6
खण्ड-ख (Section- B) महाकविकालिदास – अभिज्ञानशाकुन्तलम् (नाटक) अंक : 1,4
खण्ड-ग (Section- C) कृष्ण मिश्र-प्रबोधचन्द्रोदय (नाटक), अंक-4, 5
खण्ड-घ (Section- D) संस्कृत नाटकों का समालोचनात्मक- अध्ययन

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का ध्येय छात्रों को संस्कृत के प्रमुख नाट्य साहित्य से अवगत कराना है जोकि संस्कृत नाट्य के विकास के तीन कालों का प्रतिनिधित्व करता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रविभिन्न कालखण्डों में निर्मित संस्कृत नाट्य साहित्यसे परिचित हो पायेंगे।
2. अभिनय आदि की नाट्यकलाओं में भी योग्यता अभिरुचि के अनुसार प्राप्त करने में सक्षम होंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड- क (Section – A)
महाकविभास-स्वप्नवासवदत्तम् (नाटकम्) अंक : 1,6

घटक (Unit) –1 स्वप्नवासवदत्तम् -1 और **6 अंक** की विषय-वस्तु, अनुवाद और व्याख्या तथाभास की शैली की विलक्षणता, चरित्र-चित्रण।
घटक (Unit)–2स्वप्नवासवदत्तम् में1और 6 अंक का महत्त्व, समाज, विवाह के मानदण्ड, राज्य/वासवदत्ता की पुनर्प्राप्ति कथा , भासो हास: का विवेचन।

खण्ड- ख (Section – B)
महाकविकालिदास– अभिज्ञानशाकुन्तलम्(नाटकम्) अंक : 1,4

घटक (Unit) –1 (क)अभिज्ञानशाकुन्तलम्- लेखक-परिचय, काल-निर्धारण तथा प्रथम अंक की विषय-वस्तु- व्याकरणात्मक-विश्लेषण, अनुवाद एवं स्पष्टीकरण –व्याख्या, पारिभाषिक-विश्लेषण, यथा-नान्दी, प्रस्तावना, सूत्रधार, नटी, विष्कम्भक, विदूषक, कञ्चुकी।
(ख) कवि की काव्यात्मक विशिष्टता, कथावस्तप-योजना, प्रकृति का मानवीकरण, भाषाशैली, उपमा कालिदास में ध्वनि तथा महाकविकालिदास और अभिज्ञानशाकुन्तलम् की लोकप्रियता
घटक (Unit)–2 चतुर्थ अंक की विषय- वस्तु – योजना (व्याकरणात्मक-विश्लेषण, अनुवाद एवं स्पष्टीकरण-व्याख्या), कवि की काव्यात्मक विशिष्टता।

खण्ड-ग (Section – C)
कृष्ण मिश्र- प्रबोधचन्द्रोदयम् (नाटक), अंक-4, 5

घटक (Unit) –1(क) प्रबोधचन्द्रोदय के लेखक का परिचय, काल- निर्धारण तथा नाटक की विषय-वस्तु।
(ख) चतुर्थ अंक का व्याकरणात्मक-विश्लेषण, अनुवाद एवं स्पष्टीकरण-व्याख्या, कवि की काव्यात्मक विशिष्टता, कथावस्तु-योजना।
घटक (Unit) –2 पञ्चम-अंक का व्याकरणात्मक-विश्लेषण, अनुवाद एवं स्पष्टीकरण-व्याख्या, कवि की काव्यात्मक विशिष्टता, कथावस्तु-योजना।

खण्ड-घ (Section –D

संस्कृत नाटकों का समालोचनात्मक- अध्ययन

घटक (Unit) –1(क) संस्कृत नाटक :उत्पत्ति, विकास एवं स्वरूप

(ख) प्रमुख नाटक और नाटककार एवं उनका कर्तृत्व - भास, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, श्रीहर्ष, भवभूति और भट्टनारायण के विशेष सन्दर्भ में।

संस्तुत ग्रन्थ

1. सुबोधचन्द्र पन्त, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. सुरेन्द्रदेव शास्त्री, रामनारायण बेनीप्रसाद, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, इलाहाबाद
3.M.R. Kale(Ed.), Abhijñanashakuntalam,MLBD, Delhi.
4. Gajendra Gadakar(Ed.), Bose, Ramendramohan, Abhijñanashakuntalam, Modern Book Agency, 10 College, Square, Calcutta.
7. जयपाल विद्यालङ्कार, स्वप्नवासवदत्तम्, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
9. **कृष्ण मिश्र- प्रबोधचन्द्रोदय,**चौखम्बाविद्याभवन, वाराणसी

Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed.

UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-तृतीय (Semester III)

आधारभूत पत्र (Core paper) Paper Code HSA– C312	संस्कृत काव्यशास्त्र और साहित्यिक समीक्षा Sanskrit Poetic and literary criticism	पूर्णाङ्क -100 सत्रान्त परीक्षा -70 आन्तरिक परीक्षा-30 सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section – A) संस्कृत काव्यशास्त्रका परिचय

खण्ड-ख (Section – B) काव्य के भेद

खण्ड-ग (Section – C) शब्द - शक्ति

खण्ड-घ (Section –D) अलंकार एवं छन्द

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

साहित्य शास्त्र से सम्बद्ध इस पाठ्यक्रम का अध्ययन सभी काव्यगत कलाओं ,अलंकार (साहित्य) रस, रीति, वक्रोक्ति, ध्वनि, औचित्य आदि सम्प्रदायों को सम्मिलित करता है। संस्कृत साहित्यशास्त्र का सम्पूर्ण साम्राज्य, काव्य की परिभाषा, विभाग, शब्द का कार्य एवं तात्पर्य, रस और अलंकार के सिद्धान्त, छन्द आदि पर पुष्पित पल्लवित हुआ है। यह छात्रों की रचनात्मक लेखन एवं साहित्यिक रसास्वादन के सामर्थ्य को विकसित करने में सहायक होगा।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रसंस्कृत के साहित्यशास्त्र की विभिन्न विधाओं से परिचित हो सकेगा।
2. साहित्यिक लेखनकला में ज्ञान एवं योग्यता प्राप्त कर सोई हुई छात्र की प्रतिभा का जागरण सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)

संस्कृत काव्यशास्त्र का परिचय

घटक (Unit) –1 संस्कृत काव्यशास्त्र का परिचय : संस्कृत काव्यशास्त्रकी उत्पत्ति और विकास,काव्यशास्त्र के विभिन्न नाम –क्रियाकल्प, अलंकारशास्त्र, साहित्यशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र।

खण्ड-ख (Section – B)

काव्य के भेद

घटक (Unit) –1 काव्य के प्रकार – दृश्य, श्रव्य, मिश्र(चम्पू)

साहित्यदर्पण के अनुसार- महाकाव्य, खण्डकाव्य, गद्यकाव्य, कथा और आख्यायिका।

खण्ड- ग (Section –C)

शब्द - शक्ति और रस-सूत्र

घटक (Unit) –1काव्यप्रकाश के अनुसार - शब्द-शक्ति(अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना का सामन्य परिचय)

खण्ड- घ (Section –D)

अलंकार एवं छन्द

सत्र 2019-20 से प्रभावी

घटक (Unit) –1 अलंकार- (लक्षण एवं उदाहरण) अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अपह्नुति ,उत्प्रेक्षा, निर्दशना, व्यतिरेक, समासोक्ति, स्वाभावोक्ति, अप्रस्तुतप्रशंसा, अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति, काव्यलिंग तथा विभावना।

घटक (Unit) –2छन्द- (लक्षण एवं उदाहरण)आर्या, अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, उपजाति, वसन्ततिलका, मालिनी, मन्दाक्रान्ता,शिखरिणी, शार्दूलविक्रीडितम्, स्रग्धरा।

संस्तुतग्रन्थाः

1. Alankara according to Sahityadarpana(Ch. X)and metres according to prescribed texts of poetry and drama.
2. Dwivedi, R.C, The Poetic Light:, Motilal Banarsidas, Delhi.1967.
3. Kane P.V., History of Sanskrit Poetics pp.352-991,
4.Kane, P.V., 1961, History of Sanskrit Poeticsand its Hindi translation by IndrachandraSHSAtri,MotilalBanarasidas, Delhi.
5. Kavyaprakasha, karikas4/27, 28 with explanatory notes.
6. Ray, Sharad Ranjan, Sahityadarpana; Vishvanatha, (Ch 1,VI& X) with Eng. Exposition, Delhi.
7. Sahityadarpana: (Ch.VIth), Karika6/1,2,313-37 8.
8. काव्यप्रकाश
9. साहित्यदर्पण
10 संस्कृत साहित्य का इतिहास।

Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed.

UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार(B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-तृतीय (Semester III)

आधारभूत पत्र (Core paper) भारतीय सामाजिक संस्थाएँ और राजनीति **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code HSA– C313 **Indian Social Institutions and Polity** **सत्रान्त परीक्षा -70**

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section – A) भारतीय सामाजिक संस्थाएँ: प्रकृति और अवधारणाएँ

खण्ड-ख (Section – B) समाज की संरचना और जीवन-मूल्य

खण्ड-ग (Section – C) भारतीय राजनीति: उत्पत्ति और विकास

खण्ड-घ (Section – D) भारतीय राजनीति के मूलभूत-सिद्धान्त तथा भारतीय राजनीतिक विचारक

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

धर्मशास्त्र साहित्य में सामाजिक रीति, रिवाज, प्रथाएँ और भारतीय नीति को रेखांकित किया गया है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य छात्रों को सामाजिक संस्थाओं और भारतीय नीति के विभिन्न प(प्रतिस्थापनाओं)क्षों से परिचित कराना है। जिसका प्रतिपादन विभिन्न कालों में सृष्ट सभ्यताओंजिनका सजीव चित्रण , महाभारत, पुराण, कौटिल्य के अर्थशास्त्र और अन्य साहित्य जो नीतिशास्त्र के नाम से ज्ञात हैमें हुआ है। ,

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रभारतीय प्राचीन सामाजिक रीति नीति से परिचित होगा।
2. वर्णाश्रम व्यवस्था से परिचय प्राप्त कर उसके उत्कृष्ट गुणों को समाज में आरोपित कर सकता है।

Unit-Wise Division :

खण्ड-क (Section – A)

भारतीय सामाजिक संस्थाएँ: प्रकृति और अवधारणाएँ

घटक (Unit)1- भारतीय सामाजिक संस्थान- परिभाषा एवं क्षेत्र, सामाजिक संस्थानों की समाजशास्त्रीय परिभाषा, सामाजिक परिवर्त्तन की प्रवृत्ति तथा प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था- मनु, कौटिल्य एवं याज्ञवल्क्य के अनुसार।

घटक (Unit)–2 सामाजिक नैतिकता के अर्थ में धर्म के विभिन्न प्रकार (मनुस्मृति10, 63; विष्णुपुराण 2.16-17); कर्तव्य के अर्थ में धर्म के छ: प्रकार (याज्ञवल्क्यस्मृति पर मिताक्षरा टीका,1.1), दस लक्षणात्मक धर्म के रूप में नैतिक गुण (मनुस्मृति, 6.92) और चौदह-धर्मस्थान (याज्ञवल्क्यस्मृति, 1.3)

खण्ड-ख (Section – B)

समाज की संरचना और जीवन के मूल्य

घटक (Unit)1 वर्ण और जाति व्यवस्था : चतुर्धावर्ण-व्यवस्था- ऋग्वेद 10.90.12, महाभारत (शान्तिपर्व, 72.3-8), गुण और कर्म के अनुसार वर्ण का विभाजन- (भगवद्गीता 4.13,18.41-44)।

अंतर्-जातीय विवाह से जाति-प्रणाली का उद्भव -महाभारत, अनुशासनपर्व, 48.3-11; वर्ण- व्यवस्था से गैर-आर्य जनजातियों का उद्भव- महाभारत,शान्तिपर्व, 65.13-22, जाति व्यवस्था के उन्नयन और अपनयन हेतु सामाजिक नियम - आपस्तम्बधर्मसूत्र, 2.5.11.10-11, बौधायनधर्मसूत्र,1.8.16.13-14, मनुस्मृति, 10.64, याज्ञवल्क्यस्मृति 1.96।

घटक (Unit) 2 समाज में महिलाओं की स्थिति: समाज के विभिन्न चरणों में महिलाओं की स्थिति का संक्षिप्त सर्वेक्षण। महाभारत में महिलाओं की स्थिति(अनुशासनपर्व- 46.5-11, सभापर्व- 69.4-13 । वराहमिहिर की बृहत्संहितामें महिलाओं की प्रशंसा –स्त्रीप्रशंसा अध्याय-74.1-10। महिला सशक्तिकरण में आर्य समाज का योगदान।

घटक (Unit)3जीवन के सामाजिक मूल्य :सोलह संस्कारों के विशेष संदर्भ में भारतीय जीवन पद्धति की सामाजिक प्रासंगिकता ।जीवन के चार उद्देश्य-पुरुषार्थचतुष्टय (1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम और4. मोक्ष) । आश्रम - 1. ब्रह्मचर्य, 2. गृहस्थ, 3.वानप्रस्थऔर4.संन्यास।

खण्ड-ग (Section – C)

भारतीय राजनीति: उत्पत्ति और विकास

घटक (Unit)–1 राजनीति के प्रारम्भिक चरण (वैदिक काल), प्रजा के द्वारा राजा का चुनाव, वैदिक काल में 'विश' (ऋग्वेद 10.173; 10.174, अथर्ववेद, 3.4.2, 6.87.1-2)।

वैदिक काल में संसदीय संस्थाएँ: सभा, समिति और विदथ-अथर्ववेद, 7.12.1;12.1.6; ऋग्वेद 10.85.26; राजकर्त्ता (किंग-मेकर)- अथर्ववेद 3.5.6-7, रत्नियों की परिषद्- शतपथब्राह्मण 5.2.5.1; सम्राट् का राज्याभिषेक समारोह- शतपथब्राह्मण, 51.1.8-13; 9.4.1.1-5।

घटक (Unit)–II भारतीय राजनीति के सन्दर्भ में स्वामी दयानन्द के विचार (सत्यार्थप्रकाश छठा समुल्लास)

खण्ड-घ (Section – D)

मूलभूत सिद्धान्त और भारतीय राजनीति के विचारक

घटक (Unit)–I भारतीय राजनीति के मूलभूत सिद्धान्त **-:** राज्य के सप्तांग सिद्धान्त- 1.स्वामी, 2. अमात्य, 3. जनपद 4. पुर, 5. कोष, 6. दण्ड और 7. मित्र (अर्थशास्त्र, 6.1 महाभारत- शान्तिपर्व, 56.5, शुक्रनीति, 1.61-62)।

अन्तर्-राज्य सम्बन्धों के मण्डल सिद्धान्त : 1.अरि, 2. मित्र, 3.अरि-मित्र, 4.मित्र-मित्र, 5.अरि-मित्र-मित्र।

युद्ध और शांति की षाड्गुण्य नीति: 1. संधि, 2. विग्रह, 3. यान, 4. आसन, 5. संश्रय, 6.द्वैधीभाव।

राज्य की शक्ति सन्तुलन के चार उपाय : 1.साम 2.दाम, 3.दण्ड. 4.भेद।

राज्य शक्ति के तीन प्रकार: 1.प्रभु-शक्ति 2.मन्त्रशक्ति 3.उत्साहशक्ति।

घटक (Unit)–II भारतीय राजनीति के प्रमुख चिन्तक- मनु, कौटिल्य, कामन्दक, सोमदेव सूरी, स्वामी दयानन्द सरस्वती।

संस्तुतग्रन्था:

1. ApastambadharmaSootra - (Trans.), Bühler, George, The Sacred Laws of the Aryas,SBEVol. 2, Part 1,1879
2. ArtHSAHSAtra of Kautilya - (Ed.)Kangale, R.P. Delhi, Motilal Banarasidas 1965
3. Atharvavedasanhita-(Trans.) R.T.H. Griffith, Banaras, 1896-97, rept.(2 Vols) 1968.
4. BaudhayanadharmaSootra - (Ed.) Umesha Chandra Pandey,Chowkhamba Sanskrit SeriesOffice,Varanasi,1972.
5. Mahabharata(7 Vols) -(Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59.
6. Manu's Code of Law - (Ed. & Trans.) :Olivelle, P. (A Critical Edition and Translation oftheManava- DharamasHSAtra), OUP, New Delhi, 2006.
7. RamayanaofValmeeki — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59. (3 Vols)
8. Ṛgvedasanhita (6 Vols)-(Eng. Tr.) H.H. Wilson, Bangalore Printing & Publishing Co., Bangalore, 1946.
9. SHatapathabrahmana - (with Eng. trans. ed.) Jeet Ram Bhatt, Eastern (3 Vols), BookLinkers, Delhi, 2009.

10. Visnupurana - (Eng. Tr.) H.H. Wilson, PunthiPustak,reprint, Calcutta, 1961.
11. Yajñavalkyasmṛti with Mitakshara commentary - Chowkhamba Sanskrit Series Office,Varanasi,1967
12. आपस्तम्बधर्मसूत्र—हरदत्त की टीकासहित, चौखम्बा संस्कृतसीरीज, वाराणसी।
13. कौटिलीय अर्थशास्त्र
14. नीतिवाक्यामृतम्—सोमदवेसूरी विरचित
15. महाभारत
16. मनुस्मृति
17. शतपथब्राह्मण
18. शुक्रनीति
19सत्याग्रहगीता
20. श्रीमद्वाल्मीकिरामायण
21. काणे, पी.वी.—धर्मशास्त्र का इतिहास (1—4 भाग), अनु0 अर्जुन चौबे काश्यप,हिन्दी समिति,लखनऊ, 1966—73।
22. कृष्णकुमार—प्राचीनभारत का सांस्कृतिक इतिहास,
23. जायसवाल सुवीरा - वर्णजातिव्यवस्था : उद्भव,प्रकार्य और रूपान्तरण, दिल्ली, 2004।
24. दीक्षित, प्रेमकुमारी—प्राचीनभारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, उत्तरप्रदेश, हिन्दीग्रन्थअकादमी,लखनऊ, 1977।
25. नाटाणी, प्रकाशनारायण—प्राचीनभारत के राजनीतिक विचारक, पोइन्टरपब्लिशर्स, जयपुर, 2002।
26. नारायण, इकबाल—आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएं, ग्रन्थविकास, जयपुर, 2001।
27. मोहनचन्द—जैन संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय समाज, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 1989।
28. वाजपेयी, अम्बिकाप्रसाद—हिन्दूराज्य शास्त्र, प्रयाग, संवत् 2006।
29.विद्यालङ्कार, सत्यकेतु—प्राचीनभारतीय शासन व्यवस्था औरराजशास्त्र,सरस्वतीसदन,मसूरी, 1968।
30. सहायक शिवस्वरूप—प्राचीनभारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास,मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2012।
31Altekar, A.S - State and Government in Ancient India, MotilalBanarsidass, Delhi, 2001.
32. Altekar, A.S - The Position of Women in Hindu Civilization, Delhi, 1965.
33. Belvalkar, S.K.-Mahabharata:SHantiparvam, 1954.
34. Bhandarkar, D.R. - Some Aspects of Ancient Indian Hindu Polity,Banaras Hindu University
35. Bharadwaj, Ramesh: Vajrasoocee of Ashvaghosha (Varna-Jati through the Ages), Vidyanidhi, Delhi

Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed.

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-तृतीय (Semester III)

कौशलविकास पाठ्यक्रम अभिनय एवं पटकथा लेखन **पूर्णाङ्क -100**
(Skill development course) **(Acting and Script Writing)** **सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA–S311 **आन्तरिक परीक्षा-30**
सकल-अर्जिताधिभार 04

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्डक (Section- A) अभिनय
खण्ड ख (Section- B) पटकथा लेखन

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

अभिनय नाटक के प्रायोगिक पक्ष से सम्बन्ध रखता है और यह अभिनेता पर आधारित है, जबकि पटकथा लेखन का सम्बन्ध समाज से है इस पत्र का उद्देश्य दोनों कलाओं के सैद्धान्तिक पक्षों को आत्मसात कराना है। सृजन का प्रशिक्षण और नाट्य की प्रस्तुति व्यक्ति की स्वाभाविक प्रतिभा को प्रस्फुटित करने में सहायक हैं। यह पत्र दोनों की चर्चा छात्रों से करता है, साथ ही छात्रों की अभिनयात्मक प्रतिभा कोधार देने में भी सहायक है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र में छुपी हुई अभिनय की प्रतिभा जागरित हो सकती है।
2. नाट्य आदि के लेखन को नई दिशा मिल सकना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड क (Section – A)

अभिनय

घटक(Unit) 1 - (क) अभिनय के लिये सक्षम व्यक्ति (कुशल, विदग्ध, प्रगल्भ, जितश्रमी)।
(ख) लोकधर्मी एवं नाट्यधर्मी अभिनय।
(ग) नाट्यप्रयोक्ता गण – सूत्रधार, नाट्यकार, नट, कुशीलव, भरत, नर्तक, विदूषक इत्यादि।

घटक (Unit) 2 -(क) पात्रों की भूमिका नियोजन - विभाजन के सामान्य सिद्धान्त, गौणपात्रों की भूमिका, स्त्रीपात्रों की भूमिका, पात्रनियोजन के विशिष्ट प्रयोजन।

घटक (Unit) 3 -अभिनय की परिभाषा और प्रकार-
(क) आंगिक- अंग, उपांग, प्रत्यंग, (ख) वाचिक- स्वर, स्थान, वर्ण, काकु, भाषा।
(ग) सात्त्विक, (घ) आहार्य- पुस्त, अलंकार, अंगरचना, सज्जीव (वेषभूषा प्रसाधन) ।

खण्ड –ख (Section–B)

पटकथा लेखन

घटक (Unit) 1 - (क) नाटकीय रचना के प्रकार- सुकुमार, आविद्ध।
(ख) कथावस्तु की प्रकृति- आधिकारिक, प्रासंगिक, दृश्य, सूच्य।

सत्र 2019-20 से प्रभावी

घटक (Unit) 2 -कथावस्तु का विभाजन

(क) कथावस्तु के स्रोत- प्रख्यात, उत्पाद्य, मिश्र।

(ख) कथावस्तु के उद्देश्य- कार्य (धर्म, अर्थ, काम)।

(ग) कथावस्तु के घटक- पञ्च अर्थ प्रकृतियाँ, कार्यावस्थाएँ एवं सन्धि।

(घ) पाँच प्रकार के अर्थोपक्षेपक।

घटक (Unit) 3 -संवाद लेखन, संवाद के प्रकार- सर्वश्राव्य (प्रकाश्य) अश्राव्य (स्वगत) नियतश्राव्य (जनान्तिक, अपवारित), आकाशभाषित।

घटक (Unit) 4 -(क) नाटक की अवधि (ख) तीन घटक- समय, कार्य और स्थान (ग) नाटक का आरम्भ- पूर्वरंग (रंगद्वार) नान्दी, प्रस्तावना, प्ररोचना

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. Ghosh, M.M. Nāṭyaśāstra ofBharatamuni.

2. M.M. Ghosh, Nāṭyśāstra of Bharatamuni, vol-1, Manisha Granthalaya, Calcutta,1967.HSAs,TheDaśarūpaka:ATreatiseonHinduDramaturgy, ColumbiaUniversity, NewYork ,1912.

3. Adyarangachrya,IntroductiontoBharata'sNāṭyaśāstra,PopularPrakashanBombay,1966.

पंचम पत्र - जेनेरिक विषय के अन्तर्गत छात्र प्राचीन भारतीय इतिहास HHS-G301 / राजनीति विज्ञान/ योग विज्ञान को ले सकते हैं (सम्बद्ध विषय के पाठ्यक्रम सम्बन्धित विभाग से प्राप्य)

पंचम - अनिवार्य अतिरिक्त पत्र भारतीय ज्ञान परम्परा

सत्र 2019-20 से प्रभावी

निम्न जेनेरिक पत्र में से कोई एक पत्र संस्कृत से भिन्न विभाग के छात्र पढेंगे

विद्यालङ्कार (बी0ए0 संस्कृत ऑनर्स)

संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

Generic Elective (GE) Course

सत्र- तृतीय (Semester III)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय
Generic Elective (GE)
Paper–HSA – G311

प्राचीन भारतीय राजनीति
Ancient Indian Polity

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06
(Total Credits - 06)

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section-A) प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप, उद्भव और क्षेत्र
खण्ड-ख (Section-B) राज्य का स्वरूप और प्रकार
खण्ड-ग (Section -C) राजतन्त्र, मन्त्रीपरिषद् और मन्त्रीमण्डल
खण्ड-ग (Section -D) कानून, न्याय, कर प्रणाली और अंतर्राज्यीय सम्बन्ध

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का प्रयोजन विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य में विद्यमान राजनीतिक संस्था एवं भारतीय नीतियों से परिचित कराना है। इन नीतियों का प्राचीन संस्कृतवाङ्मय में वैदिक संहिताओं से लेकर धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र की परम्पराओं में प्राप्त होता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रसंस्कृत ग्रन्थों में प्रदर्शित राजधर्म के स्वरूप को समझने में सफल होंगे।
2. राजनीति के क्षेत्र में उतरने वाले छात्रों के लिए इस साहित्य का अध्ययन एक नई ऊर्जा प्रदान कर सकने में समर्थ हो सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -A)

प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप, उद्भव और क्षेत्र

घटक (Unit–1) राजनीतिविज्ञान का स्वरूप, क्षेत्र और स्रोत
(क) प्राचीन भारतीय राजनीति का स्वरूप – दण्डनीति, धर्मशास्त्र और नीतिशास्त्र
(ख) भारतीय राजनीति का क्षेत्र– धर्म, अर्थऔर नीति के साथ सम्बन्ध
(ग) भारतीय राजनीति के स्रोत – वैदिक साहित्य, पुराण, रामायण, महाभारत, धर्मशास्त्र, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र

घटक (Unit–2) राज्य का उद्भव : दण्डनीति, मत्स्यन्याय-सिद्धान्त (अर्थशास्त्र1.1.3) महाभारत का शान्तिपर्व 67.17-28, मनुस्मृति 7.20 राज्य का दैवीय सिद्धान्त (अर्थशास्त्र 1.9, महाभारतशान्तिपर्व 67, 43-48 मनुस्मृति 7.4-7)

खण्ड-ख (Section -B)

राज्य का स्वरूप और प्रकार

घटक (Unit–1) (क) राज्य के प्रकार : राज्य, स्वराज्य, भोज्य, वैराज्य, महाराज्य, साम्राज्य (ऐतरेय ब्राह्मण 8.3.13-14, 8.4.15-16)

(ख) बौद्धसाहित्य में लोकतन्त्र (दिग्घनिकाय, महापरिनिब्बानसुत्त, अंगुत्तरनिकाय 1.213, 4.252, 256)

घटक (Unit–2) (क) राज्य की प्रकृति : सप्तांग सिद्धान्त - स्वामी आमात्य, जनपद, पुर, कोष, दण्ड, मित्र (अर्थशास्त्र 6.1, मनुस्मृति 9.294)

खण्ड-ग (Section-C)

राजतन्त्र, मन्त्रीपरिषद् और मन्त्रीमण्डल

घटक (Unit–1) (क) राज्यतंत्र: राजशाही, उत्तराधिकार, राज्याभिषेक, राजा के प्रजा के प्रति कर्त्तव्य (शुक्रनीति 4.2.130, 137) राजा न्यासी के रूप में (अर्थशास्त्र 10.3)

(ख) नैतिक व्यवस्था के रूप में राजा (महाभारत, शान्तिपर्व 120.1-35, मनुस्मृति 7.1-35), मन्त्रीमण्डल: वैदिक युग में रत्नी (मन्त्रीपरिषद्), (शतपथ ब्राह्मण 5.2.5.1), कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मन्त्रीमण्डल (अर्थशास्त्र 1.41.5, 1.11) एवं (शुक्रनीति 2.70-72)

घटक (Unit–2) केन्द्रीयपरिषद्और स्थानीय प्रशासन :

(क) वैदिक साहित्य में केन्द्रीय परिषद् सभा : सभाऔर समिति (अथर्ववेद 7.12.1, 12.1.6) तथा विदथ (ऋग्वेद 10.85.26), स्थानीय निकाय : रामायणऔर माहाभारत में पौर-जनपद

(ख) ग्रामीण समिति : सभा, पंचायत

खण्ड-घ (Section-D)

कानून, न्याय, कर प्रणाली और अंतर्राज्यीय सम्बन्ध

घटक-क (Unit–1) (क) कानून के स्रोत के चार प्रकार : (1) धर्म, (2) व्यवहार, (3) चरित्र, (4) राजशासन

(ख) कानूनप्रवर्तन के चार प्रकार : (1) जाति के नियम (जातिधर्म (2) स्थानीयरीति-रिवाज, जनपदधर्म, **(3)** समूह के उपनियम (श्रेणीधर्म) (4) पारिवारिक रीति-रिवाज (कुलधर्म)

घटक-ख (Unit–2) न्यायिक प्रशासनऔर न्यायालय**: (क)** राजा न्याय के सम्पूर्ण मूल स्रोत एवं अध्यक्ष के रूप में।

(ख) मुख्य न्यायाधीश - प्राड्विवाक एवं सभासद के सदस्यों के गुण (शुक्रनीति 4/5/69-196)

दो प्रकार के राजकीय न्यायालय : धर्मस्थीय एवं कण्टकशोधनक (अर्थशास्त्र 3/1-20) ग्रामस्थ-सामाजिक एवं स्थानीय न्यायालय - कुल, पुग एवं धर्माशन

घटक-ग (Unit–3) राज्य की करनीति – शास्त्रानुसार उचित एवं न्यायसंगत कराधान नीति (महाभारत शान्तिपर्व 71/10-25), मनुस्मृति 7/127, 144) महाभारत में अनीतिपूर्ण कर प्रणाली की आलोचना (87/19-18-22, 88.4-7)

घटक-घ (Unit–4) राज्य के अन्तर्राज्यीय सम्बन्ध : मण्डल का संक्षिप्त सर्वेक्षण, अंर्तराज्यीय सम्बन्ध का संक्षिप्त सर्वेक्षण, कूटनीति के सिद्धान्त एवं साधन : साम, दाम, दण्ड, भेद, युद्ध एवं शान्ति की कूटनीति, षाड्गुण्य सिद्धान्त: संधि, विग्रह, आसन, संश्रय, द्वैधीभाव

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. ArtHSAHSAtra of Kautilya— (ed.) Kangale, R.P. Delhi, Motilal Banarasidas 1965
2. Atharvaveda samhita— (Trans.) R.T.H. Griffith, Banaras, 1896-97, rept. (2 Vols) 1968.
3. Mahabharata (7 Vols) — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59.
4. Manu's Code of Law— (ed. & trans.) : Olivelle, P. (A Critical Edition and Translation of the Mānava Dharmaś stra), OUP, New Delhi, 2006.
5. Ramayana of Valmaki — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59. (3 Vols)
6. Rgvedasamhita (6 Vols) — (Eng. Tr.) H.H. Wilson, Bangalore Printing &Publishing Co., Bangalore, 1946.
7. Satapatha brahmana— (with Eng. trans. ed.) Jeet Ram Bhatt, Eastern (3 Vols) Book Linkers,Delhi, 20

विद्यालङ्कार (बी0ए0 संस्कृत ऑनर्स)

संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

Generic Elective (GE) Course

सत्र- तृतीय (Semester III)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय
Generic Elective (GE)
Paper–HSA– G312

भारतीय पुरालेख एवं शिलालेख
Indian Epigraphy & Paleography

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section-A) प्रमुख शिलालेखों का अध्ययन
खण्ड-ख (Section-B) भारतीय पुरालेख शास्त्र
खण्ड-ग (Section -3) ब्राह्मीलिपि और भारतीय पुरालेख शास्त्र के अध्ययन का इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत में लिखी गई पुरालेख सम्बन्धी यात्रा से परिचित कराना है। पुरातत्त्व अकेले ऐसे स्रोत हैं, जो अपने समय की अर्थव्यवस्था, भूगोल, राजनीति और समाज की सीधी-सीधी जानकारी देते हैं। यह पत्र छात्रों को सहायता करता है कि वे संस्कृत की विभिन्न शैलियों से परिचित हो सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रसंस्कृत में लिखे गए प्राचीन अभिलेखों से परिचित हो सकता है।
2. इतिहास एवं पुरातत्त्व में विशेष अभिरुचि रखने वाले छात्रों को इस पत्र से अत्यधिक लाभ सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -A)
प्रमुख शिलालेखों का अध्ययन

घटक-क (Unit–1) (क) अशोक के राजपत्रऔर नैतिक मूल्य : (1) समाज (2) सुश्रूषा (3) चिकित्सा (4)
(ख) अशोक के अनुसार धम्म
(ग) अशोक के राजपत्र, प्राशासनिक नौकरशाह : (1) रज्जुक (2) युक्त (3) धर्म –महामात्र
(घ) लोक कल्याणकारी राज्य: बांधों का पुनर्निर्माण, रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेखों में मति सचिव एवं कर्म सचिव

घटक-ख (Unit–2) (1) लौह स्तम्भ अभिलेख :
(क) ईरान स्तम्भ अभिलेखऔर समुद्रगुप्त की स्थिति
(ख) चन्द्रगुप्तकामेहरौली लौह स्तम्भ अभिलेख
(2) समुद्रगुप्त की मृत्यु के बाद अधीनस्थ शासकों की प्रतिक्रया
(3) शक्तिशाली चन्द्रगुप्त द्वितीय
(4) चह्वाण शासक का प्रभाव, दिल्ली टोपरा स्तम्भ अभिलेख में प्रदर्शित वीसलदेव

खण्ड-ख (Section -B)
भारतीय पुरालेख शास्त्र

घटक-क (Unit–1) (क) भारत में प्राचीनकालीन लेखन :
(1) विदेशी विद्वानों के कथन
(2) साहित्यिक प्रमाण
(3) भारतीय पुरालेख शास्त्रों के अध्ययन

(ख) अभिलेखों के अध्ययन का महत्त्व :

(1) भौगोलिक विवरण
(2) ऐतिहासिक प्रमाण
(3) समाज
(4) धर्म
(5) साहित्य
(6) आर्थिक स्थिति
(7) प्रशासन

घटक (Unit–2) (क) अभिलेखों के प्रकार :प्रशस्ति, धार्मिक, दान, अनुदान
(ख) लेखन सामग्री : चट्टानें, स्तम्भ, धातुपात्र, मूर्ति, लेखनी, ब्रश, छैनी, शलाका, रंग, चित्रकारी इत्यादि

खण्ड-ग (Section-C)

ब्राह्मीलिपि और भारतीय पुरालेख शास्त्र के अध्ययन का इतिहास

घटक (Unit–1) (क) ब्राह्मी लिपि का उद्भव :
(1) विदेशी उद्भव – ग्रीक, फोनेनिशियन
(2) भारतीय उद्भव - दक्षिण भारतीयों के सिद्धान्तऔर आर्यन् सिद्धान्त
(ख) 700 ईसा पर्यंत लिपियों का विकास
(ग) ब्राह्मी लिपि केप्रकार

घटक-ख (Unit–2) (क) भारतीय अभिलेखों के अध्ययन का इतिहास
(ख) पुरालेखों के प्रति योगदान, जी.एच. ओझा, फ्लीट, प्रिन्सेप, डी.सी. सरकार, कनिंघम, बुह्लर
(ग) विक्रम, शक, गुप्तथाहर्ष युग मेंकाल निर्धारण की विधियां :
घटक-ग (Unit–3) (क) आचार नीति :कर्म एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त, मुक्ति

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. Bhandarkar, D.R., Aśoka (Hindi)
2. Buhler, G, On the origin of the Indian alphabet & numerals.
3. Dani, A. H, Indian Paleography
4. Ojha, G. H, BhāratīyaPrāćīnaLipimāla (Hindi)
5. Pandey, R.B, AśokakeAbhilekha (Hindi), BhāratīyaPurālipi (Hindi)
6. Rana, S.S., BhāratīyaAbhilekha
7. Sircar, D.C., Indian Epigraphy
8. K.D. Bajpeyi (trans.), Indian Epigraphy, - BhāratīyaPurālipi)
9. Select Inscriptions (Part - I)
10. Upadhyay, V., PrāćīnaBhāratīyaAbhilekha (Hindi)
11. Thapar, Romila, Asoka tathā Maurya Sāmrājya Ka Patana (Hindi)

विद्यालङ्कार (बी0ए0 संस्कृत ऑनर्स)

संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

Generic Elective (GE) Course

सत्र- तृतीय (Semester III)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय	**Computer Applications fo Sanskrit**	**पूर्णाङ्क -100**
Generic Elective (GE)	**संस्कृत हेतु कम्प्यूटर अनुप्रयोग**	**सत्रान्त परीक्षा -70** **आन्तरिक परीक्षा-30**
Paper–HSA–G313		**सकल-अर्जिताधिभार 06**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section-A) संवादात्मक संस्कृत प्रशिक्षण शिक्षण उपकरण
खण्ड-ख (Section-B) भारतीय भाषाओं के लिए मानक (यूनिकोड)
खण्ड-ग (Section -C) पाठ प्रसंस्करण और संरक्षण उपकरण
खण्ड-ग (Section -D) दृष्टि विपथनस्वरूप पाठक (Optical Character Reader)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम संस्कृत में कम्प्यूटिंग के विकास और रिसर्च की वर्तमान स्थिति से छात्रों को परिचित कराएगा। प्रथम महत्त्व उन उपकरणों एवं तकनीकों को दिया जाएगा जिनका विकास सरकारी एवं प्राइवेट द्वारा वित्त पोषण के अन्तर्गत आते हैं। संस्कृत में नई तकनीकों का अन्वेषण करना भी इस पाठ्यक्रम का एक उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से संस्कृत-छात्र को आधुनिक तकनीक से परिचय प्राप्त होगा तथा वह उसका प्रयोग कर संस्कृत में निहित ज्ञान से सामान्य जनता को लाभान्वित करने में सहायक होगा।
2. संस्कृत कम्प्यूटर के लिए विशेष महत्त्व रखती है, अतः उसका उपयोग भाषाविज्ञान की दृष्टि से किया जा सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section -A)

संवादात्मक संस्कृत प्रशिक्षण शिक्षण उपकरण

घटक (Unit–1) इंटरएक्टिव संस्कृत शिक्षण उपकरण, परिचय, संस्कृत के लिए इंटरएक्टिव उपकरण क्यों? ई-लर्निंग, मल्टीमीडिया का आधार, वेब आधारित उपकरण विकास **HTML,** वेब पेज आदि, टूलऔर तकनीक

खण्ड-ख (Section -B)

भारतीय भाषाओं के लिए मानक (यूनिकोड)

घटक (Unit–1) देवनागरी लिपियों, टाइपिंग टूल्सऔर सॉफ्टवेयर में यूनिकोड टाइपिंग

खण्ड-ग (Section-C)

पाठ प्रसंस्करण और संरक्षण उपकरण

घटक (Unit–1) पाठ प्रसंस्करणऔर संरक्षण , उपकरणऔर तकनीक, सर्वेक्षण

खण्ड-घ (Section-D)

दृष्टि विपथन स्वरूप पाठक

[Optical Character Reader]

सन्दर्भ-ग्रन्थ :

1. Teacher's notes, ppt and handout
2. Bharti A., R. Sangal, V. Chaitanya, "NL, Complexity Theory and Logic" in Foundations of Software Technology and Theoretical Computer Science, Springer, 1990.

3. E-Content suggested by Teacher
4. Tools developed by Computational Linguistics Group, Department of Sanskrit, University of Delhi, Delhi-110007 available at: http://sanskrit.du.ac.in
5. Basic concept and issues of multimedia: http://www.newagepublishers.com/samplechapter/001697.pdf
6. Content creation and E-learning in Indian languages: a model: http://eprints.rclis.org/7189/1/vijayakumarjk_01.pdf
7. HTML Tutorial - W3Schools: www.w3schools.com/html

विद्यालङ्कार(B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-चतुर्थ Semester –IV

आधारभूत पत्र (Core paper)
Paper Code HSA-C411

भारतीय अभिलेख, प्राचीन लिपिविज्ञान एवं कालक्रम
Indian Epigraphy, Paleography and Chronology

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section– A) भारतीय अभिलेख
खण्ड-ख (Section– B) लिपिविज्ञान
खण्ड-ग (Section– C) प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन
खण्ड-घ (Section–D) कालक्रम

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का तात्पर्य छात्रों को संस्कृतभाषा के माध्यम से उत्कीर्ण किए गयेशिलालेख सम्बन्धीपुरा लेखों का परिचय देना है। यह एकमात्र ऐसा स्रोत है, जो समकालीन समाज, राजनीति, भूगोल और अर्थव्यवस्था को सीधा प्रभावित करता है। यह विद्यार्थियों को संस्कृत में विभिन्न प्रकार के लेखन की विधाओं से परिचय कराने में भी सहायक होगा।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत में उत्कीर्ण किए गए प्राचीन अभिलेखों से परिचित हो सकता है।
2. इतिहास एवं पुरातत्त्व में विशेष अभिरुचि रखने वाले छात्रों को इस पत्र से अत्यधिक लाभ सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)
भारतीय अभिलेख

घटक (Unit)1- भारतीय अभिलेखों का परिचय और प्रकार
घटक (Unit)2- प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के पुनर्निर्माण में भारतीय अभिलेखों का महत्त्व
घटक (Unit)3- भारत में अभिलेखों के इतिहास का अध्ययन
घटक (Unit)4- प्राचीन भारतीय लिपियों के अध्ययन का इतिहास- फ्लीट, कनिङ्घम, प्रिंसेप, बुह्लर, ओझा, डी. सी. सरकार।

खण्ड-ख (Section – B)
लिपिविज्ञान

घटक (Unit)1-लेखन-कला की प्राचीनता
घटक (Unit)2- लेखन की सामग्री तथा उत्कीर्णकर्ता (inscribers)
घटक(Unit)3-प्राचीन भारतीय लिपियों का परिचय(ब्राह्मी, खरोष्ठी)

खण्ड-ग (Section –C)
प्राचीन शिलालेखों का अध्ययन

घटक (Unit)1-अशोक का शिलालेख- गिरिनार, (Rock Edict-1) राजाज्ञा-1,
अशोक का सारनाथ स्तम्भलेख।
घटक (Unit) 2- रुद्रदमन का गिरिनार शिलालेख
घटक (Unit) 3-समुद्रगुप्त का एरण -स्तम्भलेख, चन्द्र का महरौली लौह-स्तम्भ अभिलेख

घटक (Unit) 4- बीसलदेव का दिल्ली-टोपरा स्तम्भलेख

खण्ड-घ (Section –D)

कालक्रम

घटक (Unit) 1-प्राचीन भारतीय कालक्रम का सामान्य परिचय

घटक (Unit) 2- अभिलेखों के कालनिर्धारण की प्रणाली (Chronograms)

घटक (Unit)3-अभिलेखों में प्रयुक्त मुख्यकाल-विक्रमकाल, शककाल और गुप्तकाल

संस्तुतग्रन्था:

1. अभिलेख—मंजूषा, रणजीत सिंहसैनी, न्यूभारतीय बुककार्पोरेशन, दिल्ली, 2000.
2. उत्कीणालेखपञ्चकम्, झा बन्द्धु, वाराणसी, 1968.
3. उत्कीणालेखस्तबकम्, जियालाल काम्बोज, ईस्टर्न बुकलिंकर्स, दिल्ली.
4. भारतीय अभिलेख, एस.एस. राणा, भारतीय विद्याप्रकाशन, दिल्ली, 1978.
5. भारतीय प्राचीन लिपिमाला, गौरीशंकरहीराचंद ओझा, अजमेर, 1918.
6. Select Inscriptions (Vol.1) - D.C. Sircar, Calcutta, 1965.
7. नारायण, अवध किशोर एवंठाकुरप्रसाद वर्मा : प्राचीनभारतीय लिपिशास्त्र और अभिलेखिकी,वाराणसी, 1970.
8. पाण्डे, राजबली : भारतीय पुरालिपि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1978.
9. ब्यूलर जार्ज : भारतीय पुरालिपि शास्त्र, (हिन्दीअनु0) मङ्गलनाथ सिंह, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1966.
10. मुले, गुणाकर : अक्षरकथा, प्रकाशनविभाग, भारतसरकार, दिल्ली, 2003.
11. राही, ईश्वरचन्द :लेखनकला का इतिहास (खण्ड 1—2), उत्तरप्रदशहिन्दीसंस्थान, लखनऊ, 1983.
12. सरकार, डी.सी. : भारतीय पुरालिपिविद्या, (हिन्दीअनु0) कृष्णदत्त वाजपेयी, विद्यानिधिप्रकाशन, दिल्ली, 1996.
13. सहाय, शिवस्वरूप : भारतीय पुरालेखों का अध्ययन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली.

Dani, Ahmad HSAan :Indian Paleography, Oxford, 1963.

14. Pillai, Swami Kannu& K.S. Ramchandran :Indian Chronology (Solar, Lunar and Planetary), Asian Educational Service, 2003.
15. Satyamurty, K. :Text Book of Indian Epigraphy, Lower Price Publication, Delhi, 1992.

Note: Teachers are also free to recommend any relevant books/articles/e-resource if needed

PROPOSED UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-चतुर्थ (Semester –IV)

आधारभूत पत्र (Core paper) | **आधुनिक संस्कृत साहित्य** | **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code– HSA-C412 | **Modern Sanskrit Literature** | **सत्रान्त परीक्षा -70**

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड- (Section – A) महाकाव्य और चरितकाव्य

खण्ड- (Section – B) गद्यकाव्य और रूपक

खण्ड- (Section – C) गीतिकाव्य

खण्ड- (Section –D) आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत में आधुनिक काल में सृष्ट हो रहे संरचनात्मक लेखन से परिचित करवाना है। यह पारम्परिक गम्भीरता और समृद्धि को उद्घाटित करता हुआलेखन की विभिन्न नवीन पद्धतियों से भी सम्पन्न है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र काआधुनिक संस्कृत लेखन के वैशिष्ट्य को समझ तदनुरूप साहित्यसंरचना में प्रवृत्त होना सम्भाव्य है।
2. आधुनिक रचनाओं के अध्ययन से लौकिक व्यवहारिक ज्ञान को सीख कर जीवन में उनका यथावत् प्रयोग कर उन्नतिशील बन सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)

महाकाव्य और चरितकाव्य

घटक (Unit) 1- स्वातन्त्र्यसम्भवम् (रेवाप्रसाद द्विवेदी) सर्ग 2.1-45

घटक (Unit) 2- श्रद्धानन्दचरितम् महाकाव्यम् (प्रो.राधेश्याम गंगवार) सर्ग 22

खण्ड- ख (Section – B)

गद्यकाव्य और रूपक

घटक (Unit)1- अनभीप्सितम् (डा० प्रशस्यमित्र शास्त्री) प्रथम 05 कथाएँ

घटक (Unit)2- शार्दूलशकटम् (वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य)

खण्ड- ग (Section –C)

गीतिकाव्य

घटक (Unit)1- भक्तिलहरी (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती) 01-25 श्लोक

घटक (Unit)1- भट्टमथुरानाथशास्त्रिकृत कुण्डलियां, हर्षदेवमाधवकृत हायकु- स्नानगृहे, डा० प्रशस्यमित्र शास्त्रिकृत व्यङ्ग्यार्थकौमुदी- प्रथम 05 कविताएँ।

खण्ड- घ (Section –D

आधुनिक संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण

घटक (Unit) 1- पंडित क्षमाराव, पी.के. नारायण पिल्लई, एस. बी.वर्णेकर, परमानन्द शास्त्री, रेवा प्रसाद द्विवेदी

घटक (Unit) 2- जानकी वल्लभशास्त्री, राम करण शर्मा, जगन्नाथ पाठक, एस सुन्दरराजन, शंकर देव अवतारे

घटक (Unit) 3- हरिदास सिद्धान्तवागीश, मूलशंकर एम याज्ञिक, प्रशस्यमित्र शास्त्री, लीला राव दयाल, यतीन्द्रविमलचौधरी, वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य

संस्तुत ग्रन्थ

1. शास्त्री प्रशस्यमित्र, अनभीप्सितम्, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहबाद। दूरभाष संख्या 9452670383
2. शास्त्री प्रशस्यमित्र, व्यङ्ग्यार्थकौमुदी, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहबाद। दूरभाष संख्या 9452670383
3. स्वामी सपर्पणानन्द सरस्वती, भक्तिलहरी, गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, मेरठ, उ०प्र०
4. Upadhyaya, Ramji1-dhunik Sanskrit Natak, Varanasi
5. आधुनिकसंस्कृत—साहित्य—संचयन— (सम्पा0) गिरीश चन्द्र पन्त, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2008.
6. Naranga, S.P. – Kalidasa Punarnava,
7. MusaIgaonkarKesava Rao – Adhunik Sanskrit KavyaParampara, 2004
8. उपाध्याय, रामजी—आधुनिकसंस्कृतनाटक, चौखम्बासुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 1996.
9. त्रिपाठी, राधावल्लभ—संस्कृतसाहित्य : बीसवीं शताब्दी, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, दिल्ली, 1999.
10. भार्गव दयानन्द —आधुनिकसंस्कृतसाहित्य, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1987.
11. द्विवेदी, मीरा —आधुनिकसंस्कृतमहिलानाटककककार, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2000.
12. रुचि कुलश्रेष्ठ—बीसवीं शताब्दी का संस्कृतलघुकथासाहित्य, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, दिल्ली, 2008.
13. शास्त्री, कलानाथ—आधुनिक काल का संस्कृतगद्य साहित्य, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थान, दिल्ली, 1995.
14. शुक्ल, हीरालाल—आधुनिकसंस्कृतसाहित्य, रचनाप्रकाशन, इलाहाबाद, 1971.

PROPOSED UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-चतुर्थ (Semester –IV)

आधारभूत पत्र (Core paper) संस्कृत और विश्व साहित्य **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code – HSA-C413 **Sanskrit and world literature** **सत्रान्त परीक्षा -70**

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड- (Section – A) विश्व में संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण

खण्ड- (Section – B) विश्व साहित्य में उपनिषद् और गीता

खण्ड- (Section – C) विश्व साहित्य में संस्कृत दन्तकथाएँ

खण्ड- (Section –D) दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में रामायण और महाभारत

खण्ड- (Section -E) विश्व साहित्य में कालिदास का साहित्य

खण्ड- (Section – F) विश्व में संस्कृत अध्ययन

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विश्व के विभिन्न भागों में मध्यकालीन एवं आधुनिक समय में संस्कृत साहित्य एवं संस्कृति के प्रचार और प्रसार की यात्रा से अवगत कराना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र को गर्वानुभूति होगी कि विश्व के किस भाग में भारतीय संस्कृति और संस्कृत का प्रभाव देखा जा सकता है।
2. इससे प्रेरित हो छात्र अनुकूलता के आधार पर विश्व के विभिन्न भागों में शोध कार्य के लिए जा सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)

विश्व में संस्कृत साहित्य का सर्वेक्षण

घटक (Unit)1- पूर्वी एवं पश्चिमी समाज में वैदिक-संस्कृति के तत्त्व

घटक (**Unit)2-** विश्व की भाषाओं में संस्कृत-शब्द

घटक (**Unit)3-** पूर्वी और पश्चिमी साहित्य में शास्त्रीय संस्कृत साहित्य का सामान्य सर्वेक्षण।

खण्ड- ख (Section – B)

विश्व साहित्य में उपनिषद् और गीता

घटक (**Unit)1-** दाराशिकोह के द्वारा उपनिषदों का फ़ारसी अनुवाद तथा उनका सूफ़ीवाद पर प्रभाव।

घटक (**Unit)–2** गीता का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद तथा उसका पश्चिमी देशों के धार्मिक तथा दार्शनिक विचारों पर प्रभाव।

खण्ड- ग (Section –C)

विश्व साहित्य में संस्कृत दन्तकथाएँ

घटक (Unit)1- पूर्वी और पश्चिमी भाषाओं में पञ्चतन्त्र का अनुवाद।
वेतालपञ्चाशिका, सिंहासनद्वात्रिंशिका और शुकसप्तति का पूर्वी देशों में अनुवाद ,
घटक (Unit–2) - भाषा और कला।

खण्ड- घ (Section –D)

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में रामायण और महाभारत

घटक (Unit)1- दक्षिण पूर्वी देशों में राम कथा
घटक (Unit)–2 दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों की लोक संस्कृतियों में महाभारत की कहानियाँ

खण्ड- ङ (Section –E)

विश्व साहित्य में कालिदास का साहित्य

घटक (Unit)1- कालिदास की रचनाओं का अंग्रेजी और जर्मन में अनुवाद तथा उसका पश्चिमी साहित्य और रंगमंच पर प्रभाव।

खण्ड-च (Section–F)

विश्व में संस्कृत अध्ययन

घटक (Unit)1- **(क)** एशियाई देशों में संस्कृतभाषा के अध्ययन केंद्र।
(ख) यूरोपीय देशों में संस्कृतभाषा के अध्ययन केंद्र।
(ग) अमेरिका में संस्कृतभाषा के अध्ययन केंद्र।

अनुशंसित पुस्तकें/ रीडिंग:

1. द भगवद गीता एंड द वेस्ट: द एसोटेरिक सिग्नेचर ऑफ़ द भगवद गीता एंड इट्स रिलेशन टू द पॉल ऑफ़ द रुडॉल्फ स्टीनर, पृष्ठ 43.arisebharat.com/2011/10/22/impact-of-bhagvad- गीता-ऑन-पश्चिम /
2. AWAKENING - Google पुस्तकें परिणाम।
3. बेन-एमी शर्फस्टीन (1998), ए कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी: फ्रॉम उपनिषद्स कांट, स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, आईएसबीएन 978- 0791436844, पृष्ठ 376।
4. भगवद गीता - विश्व धर्म
5. एडगर्टन, फ्रैंकलिन (1924), द पंचतंत्र रिकंस्ट्रक्टेड(Vol.1: टेक्स्ट एंड क्रिटिकल अप्लायन्सेज, Vol.2: इंट्रोडक्शन एंड ट्रांसलेशन), न्यू हेवन, कनेक्टिकट: अमेरिकन ओरिएंटल सीरीज़। वॉल्यूम 2-
3.en.wikipedia.org/wiki/Influence_of_Bhagavad_Gita
6. बनारसी, सुरेश चंद्र- 'संस्कृत आउट साइड इंडिया का प्रभाव, ए कंपैनियन टू संस्कृत लिटरेचर, MLBD, 1971।
7. कलिला और डिमना के 2008 के अपडेट के अंश- मैत्री और विश्वासघात की दंतकथाएँ।
8. फाल्कनर, आयन कीथ (1885), कलिला और डिमना या द फैबल्स ऑफ बिदपाई, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, एम्स्टर्डम, 1970।
9. हर्टेल, जोहान्स (1908-15), द पंचतंत्र: प्राचीन हिंदू कथाओं का एक संग्रह, जिसे पंचकन्याका कहा जाता है, और 1199 ईस्वी में, जैन साधु, पूर्णभद्र, ने मूल संस्कृत, हार्वर्ड ओरिएंटल सीरीज वॉल्यूम में गंभीर रूप से संपादित किया। 11,12,13, 14।
10. संस्कृत साहित्य का इतिहास, ए बेरीडेल कीथ, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स प्रा। लिमिटेड, भारत, 1993।
11. पंचतंत्र का मिर्जाकरण का इतिहास।
12. http://en.wikipedia.org/wiki/Panchatant".https://books.google.co.in/books?isbn=8184002483
13. इब्न अल-मुक़फ़ा, अब्दुल्लाह, कैलिला ई डिमना, इदस। जुआन मैनुअल कैचो ब्लेकुआ और मारेआ जीसस लाकरा, मैड्रिड: एडिटोरियल कैस्टलिया, 1984।
14. इब्न अल-मुक़ाफ़ा, अब्दुल्लाह, कलिलाह एट दिमनाह, एड। पी। लुइस चेइको। 3 एड। बेरूत: इमप्रिमरी कैथोलिक, 1947।
15. पश्चिम में भगवद गीता का प्रभाव | भरत को उठायें
16. भगवद गीता का प्रभाव - विकिपीडिया, मुक्त विश्वकोश
17. जैकब्स, जोसेफ (1888), सबसे शुरुआती अंग्रेजी संस्करण ओ फेब ऑफ बिदपाई, लंदन।
18. जेम्स ए। हिजिया, "द गीता ऑफ रॉबर्ट ओपेनहाइमर" प्रोसीडिंग ऑफ द अमेरिकन फिलॉस्फिकल सोसाइटी, 144, नं। 2 (27 फरवरी 2011 को लिया गया)।
19. कालिदास ग्रन्थावली, सम्पदा। रेवा प्रसाद द्विवेदी, काशी हिन्दूविश्वविद्यालय, वाराणसी, 1986।
20. रमेश भारद्वाज- नवजागरण एवस्त्रता आन्दोलन में उपनिषदों की भूमिका, दिल्ली देश प्रकाशन, दिल्ली
21. काशीनाथ पन्नुरगा परबा, संस्करण। (1n 9 6), विष्णुशर्मन का पंचतंत्र, तुकूम जावेजी, http://books.google.com/-id=K71WAAAAYAAJ-, Google पुस्तकें।
22. काचबुल, रेव। वींधम (1819), कालिला और डिमना या द फैबल्स ऑफ बिदपै, ऑक्सफोर्ड, (सिल्वेस्ट्रे डी स्टैसी के श्रमसाध्य 1816 से अलग अरबी पांडुलिपियों का अनुवाद)
23. माहुलिकर, डॉ। गौरी, रामायण का विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यता पर प्रभाव, रामायण संस्थान।
24. मार्क बी। वुडहाउस (1978), चेतना और ब्राह्मण-आत्मान, द मॉनिस्ट, वॉल्यूम। 61, नंबर 1, कॉन्सेप्ट ऑफ द सेल्फ: ईस्ट एंड वेस्ट (जनवरी, 1978), पृष्ठ 109- 124।
25. नेरिया एच। हेबेर, पश्चिम में उपनिषदों का प्रभाव, Boloji.com। 2012-03-02 को पुनः प्राप्त किया गया।
26. ऑलिवेल, पैट्रिक (2006), द फाइव डिस्कॉर्सेज ऑन वर्ल्डली विजडम, क्ले संस्कृत लाइब्रेरी।
27. पंचतंत्र, http://en.wikipedia.org/wiki/Panchatrant, 1 फरवरी, 2008 को पुनःप्राप्त।
28. पंडित गुरु प्रसाद शास्त्री (1935), पंचतंत्र के साथ टीका अभिनवराजलक्ष्मी, बनारस: भार्गव पुष्कलया।
29. पैट्रिक ओलिवेल (2014), द अर्ली उपनिषद, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195124354, पृष्ठ 12-14।

30. राजन, चंद्र (अनुवाद।) (1993), विष्णुशर्मा: द पंचतंत्र, लंदन: पेंगुइन बुक्स, आईएसबीएन -9780140455205- (पुनर्मुद्रण: 1995) (उत्तर पश्चिमी पारिवारिक पाठ से भी
31. रोहमन, टॉड (2009)। "शास्त्रीय काल"। वाटलिंग, गेब्रियल, क्वे, सारा में।
32. एस राधाकृष्णन, प्रिंसिपल उपनिषद जॉर्ज एलन एंड कं, 1951, पृष्ठ 22, आईएसबीएन 978-8172231248 के रूप में पुनर्मुद्रित
33. JAMES ए HIJIYA द्वारा जे। रॉबर्ट ओपेनहाइमर की गीता, इतिहास के प्रोफेसर, मैसाचुसेट्स डार्टमाउथ विश्वविद्यालय (पीडीएफ फाइल)
34. चंद्र राजन, पेंगुइन बुक्स, इंडिया, 1993 द्वारा एक परिचय के साथ संस्कृत से अनुवादित पंचतंत्र, विष्णुशर्मा।
35. वाल्मीकि की रामायण का चित्रण 16 वीं से 19 वीं शताब्दी 2012 के भारतीय लघु चित्रों के साथ हुआ, संस्करण डायने डी सेलर्स, आईएसबीएन 9782903656168
36. भारत से पंचतंत्र के पश्चिमोत्तर प्रवास पर लंदन2009 आईसीआर इलस्ट्रेटेड लेक्चर का वीडियो।
37. विष्णुशर्मा, http://en.wikipedia.org/wiki/Vishnu_Sarma, 1 फरवरी 2008 को पुनः प्राप्त।
38. विल्किंसन (1930), द लाइट्स ऑफ कैनोपस द्वारा वर्णित जे वी एस विल्किंसन, लंदन: द स्टूडियो।
39. विंटरनित्ज़, एम। इंडियन लिटरेचर की कुछ समस्याएं -मुंशीराम मनोहरलाल, दिल्ली, 1978.www.comparativereligion.com/Gita.html

नोट: यदि आवश्यक हो तो शिक्षक किसी भी प्रासंगिक पुस्तकों/ लेखों / ई-संसाधन की सिफारिश करने के लिए स्वतन्त्र हैं।

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- चतुर्थ (Semester -IV)

कौशलविकास पाठ्यक्रम | **संस्कृत छन्द और संगीत** | **पूर्णाङ्क -100**
(Skill development course) | **(Sanskrit Meter and Music)** | **सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA–S413 | | **आन्तरिक परीक्षा-30**
| | **सकल-अर्जिताधिभार 04**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड क (Section- A) छन्दशास्त्र का संक्षिप्त परिचय
खण्ड ख (Section- B) प्रमुख छन्दों का स्वरूप
खण्ड ग (Section- C) प्रमुख वैदिक छन्दों का स्वरूप एवं सस्वर गानविधि
खण्ड घ (Section- D) प्रमुख लौकिक छन्दों की स्वरूप एवं सस्वर गानविधि

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का लक्ष्य **छात्रों को** संस्कृत छन्दों का का ज्ञान कराना है,जिससे वे गेयता की तकनीक और गायन काव्य सम्बन्धी विश्लेषण करने में समर्थ हो सकें। इससे विद्यार्थी चयनित वैदिक और शास्त्रीय छन्दों को गेयता की तकनीकों के साथ समझ सकेंगे।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रशास्त्रीय संगीत कला में नैपुण्य प्राप्त कर सकते हैं।
2. सामवेद संगीत कला का प्रथम ग्रन्थ है, उसके द्वारा अथवा संस्कृत की अन्य विधाओं को जानकर छात्र संगीत की ऊँचाइयों को प्राप्त करने में समर्थ हो सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड- क (Section – A)

छन्दशास्त्र का संक्षिप्त परिचय

घटक(Unit) 1 (क) छन्दशास्त्र का परिचय।
(ख) प्राचीन भारतीय संगीतशास्त्र का परिचय- प्रमुख आचार्य एवं रचनाएँ, प्रमुख वाद्य यन्त्र।
(ग) संगीत का जीवन पर प्रभाव एवं महत्त्व।
(घ) नाट्यप्रयोग में संगीतविधान

खण्ड –ख (Section–B)

प्रमुख छन्दों का स्वरूप

घटक (Unit) 1 - (क) अक्षर, वर्णिक और मात्रिक छन्दों का परिचय
(ख) लघु, गुरु, गण एवं पाद का परिचय।

खण्ड –ग (Section–C)

प्रमुख वैदिक छन्दों का स्वरूप और सस्वर गानविधि

घटक (Unit) 1 - निम्मांकित वैदिक छन्दों का स्वरूप तथा सस्वर गानविधि -
गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती

खण्ड –घ (Section–D)

प्रमुख लौकिकछन्दों का स्वरूप एवं सस्वर गानविधि

घटक(Unit) 1- निम्कांकित लौकिकछन्दों का स्वरूप तथा सस्वर गानविधि -

भुजंगप्रयात, त्रोटक, हरिगितीका, स्रग्विणी, विद्युन्माला, अनुष्टुप्, आर्या, मालिनी, शिखरिणी वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता, स्रग्धरा, शार्दूलविक्रीडितम्

संस्तुत ग्रन्थ

1. Brown,CharlesPhilip(1869).SanskritProsodyandNumericalSymbolsExplained. London: Trübner&Co.
2. Deo, Ashwini. S (2007). The Metrical Organization of Classical Sanskrit Verse, (PDF).JournalofLinguistics43(01):63–114.doi:10.1017/s0022226706004452.
3. Recordings of recitation: H. V. Nagaraja Rao (ORI, Mysore), Ashwini Deo, Ram Karan Sharma, ArvindKolhatkar.
4. Online Tools for Sanskrit Meter developed by Computational Linguistics Group, Department of Sanskrit, University of Delhi:http://sanskrit.du.ac.in

5 धारानन्द शास्त्री (संपा0) केदारभट्ट विरचित वृत्तरत्नाकर, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 2004।

पञ्चम पत्र जेनेरिक विषय के अन्तर्गत छात्र प्राचीन भारतीय इतिहास HHS-G401 / राजनीति विज्ञान/ योग विज्ञान आदि को ले सकते हैं (सम्बद्ध विषय के पाठ्यक्रम सम्बन्धित विभाग से प्राप्य)

निम्न जेनेरिक पत्र को संस्कृत से भिन्न विभाग के छात्र पढेंगे

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
मौलिक-वैकल्पिक-विषय के लिये संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Generic Elective (GE) Course for Sanskrit
सत्र- चतुर्थ (Semester- IV)

मौलिक-वैकल्पिक-विषय	भारतीय सामाजिक विचार में व्यक्ति, परिवार एवं समुदाय	**पूर्णाङ्क -100**
Generic Elective (GE)	**Individual , Family and community in**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code–HSA-G411	**Indian Social Thought**	**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड क (Section-A) व्यक्ति
खण्ड ख (Section-B) परिवार
खण्ड ग (Section -C) समुदाय

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्र को संस्कृत साहित्य में वर्णित सामाजिक परिदृश्य से अवगत कराना है। मानव का व्यक्तिगत चिन्तन, पारिवारिक एवं सामाजिक कैसा होवह कैसे व्यवहार करे और अपना जीवन किस प्रयोजन से यापन करे।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र अपने व्यक्तित्व को कैसे निखार सकता है? उसका क्या लक्ष्य है? जान सकता है।
2. संयुक्त परिवारों की चिन्तना क्या लाभ दे सकती है? सबका सामूहिक विकास कैसे सम्भव है? यह इससे अनायास जानना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड क (Section -A)
व्यक्ति

घटक क (Unit–1) **(क)** व्यक्ति के विचार (गीता 6/5) , इन्द्रियों के विषय, बुद्धि, मन और आत्मा
(गीता 3/42, 15/7, 15/9, 3/34, 2/58,2/59, 3/6-7 , 5/8, 2/64)
(ख) त्रिविध गुण और उनका व्यक्ति पर प्रभाव (गीता 14/5-13, 14/17, 3/36-38, 18/30-32)

घटक ख (Unit–2) श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार शरीर एवं मन की कार्यप्रणाली का प्रबन्धन :
(1) कर्मयोग (2/47-48, 3/8, 3/4, 3/19, 3/25)
(2) भक्तियोग (7/1, 8/7, 9/14, 9/27, 12/11, 12/13-19)
(3) ज्ञानयोग (4/38-39, 42, 18/63)
(4) ध्यानयोग (16/12,25,26,34)

घटक ग (Unit–3) संस्कार: समाज में व्यक्ति का विकास
घटक घ (Unit–4) जीवन का उद्देश्य : पुरुषार्थ चतुष्टय

खण्ड ख (Section -B)
परिवार

घटक क (Unit–1) संयुक्त परिवार (सामनस्य सूक्त –अथर्ववेद 3/30)
घटक ख (Unit–2) वैवाहिक कर्मकाण्ड में प्रतीकात्मकता
घटक ग (Unit–3) वाल्मीकि रामायण में सीता का निष्कासन

खण्ड ग (Section-C)

समुदाय

घटक (Unit–1) सामुदायिक संगठनों की कार्य-पद्धति (संविद व्यतिक्रम / समय अनपकर्म)
घटक ख (Unit–2) संस्कृत साहित्य में व्यक्ति और प्रकृति के मध्य सामंजस्य (कालिदास के विशेष सन्दर्भ में)
घटक ग (Unit–3) दान, इष्टापूर्त्त, पञ्चमहायज्ञ

सन्दर्भ ग्रन्थ-

1. Kaane PV : History of Dharma SHaastra, Bhandarkar Oriental Research Institute,Pune
2. Pandey Rajbali: Hindu, Samskara, Motilal Banarasi Das, Delhi
3. काणे पांडुरंगवामन – धर्मशास्त्र का इतिहास, अनुवादक अर्जुनचौबेकाश्यप, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
4. पाण्डेय राजबलि– हिन्दू संस्कार – चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी 1978
5. जोशी लक्ष्मण शास्त्री – धर्मकोष, व्यवहारकाण्ड, विवादपदानि (प्रथम भाग) प्राज्ञ पाठशाला,वाई, सतारा, महाराष्ट्र
6. Upadhyay, V., PraaceenaBhaarateeyaAbhilekha (Hindi)
7. Thapar, Romila, Asoka tathaa Maurya SaamraajyaKaaPatana (Hindi)

गुरुकुलकाङ्गड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार

संस्कृतविभाग

CBCS आधृत विद्यालङ्कार (बी. ए. संस्कृत ऑनर्स)

पाठ्यक्रम के

तृतीय वर्ष के दो सत्रों- पञ्चम एवं षष्ठ का प्रारूप

त्रिवर्षीय इस पाठ्यक्रम का तृतीय वर्ष भी दो सत्रात्मक तथा पञ्चम एवं षष्ठ सत्र के रूप में संकल्पित है। इनका भी प्रायः छः छः मास का काल है। इसके अन्तर्गत पञ्चम एवं षष्ठ दोनों सत्रों में चार चार पत्रों अर्थात् कुल आठ पत्रों के अध्यापन की संकल्पना है। दोनों सत्रों में दो दो पत्र अर्थात् कुल चार पत्र मुख्य पाठ्यक्रम के अन्तर्गत हैं और दो दो पत्र अर्थात् कुल चार पत्र विशिष्ट शिक्षण वैकल्पिक (DISCIPLINE SPECIFIC ELECTIVE) (DSE) के अन्तर्गत पाठ्यविषय के रूप में निर्धारित किए गये हैं।प्रत्येक पत्र 100 अंक का होगा, जिसमें परीक्षा के लिए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 3 घण्टे में देनें होंगे। प्रश्न पत्र में निर्धारित मानदण्डों के अनुसार पूर्व वर्षों की तरह अंको के निर्धारण में 70 अंक का मूल्याङ्कन सत्रान्त परीक्षा के माध्यम से एवं 30 अंक का मूल्याङ्कन अध्यापक के द्वारा आन्तरिक परीक्षा पर आधृत होगा और क्रेडिट की दृष्टि से 06 क्रेडिट का होगा, इसप्रकार कुल मिलाकर दोनों सत्रों के कुल अंकों का योग 100×4×2 = 800 रहेगा और क्रेडिट की दृष्टि से 6×4×2 = 48 का होगा।

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-पञ्चम (Semester –V)

आधारभूत पत्र (Core paper) वैदिक साहित्य **पूर्णाङ्क -100**
Paper Code – HSA-C511 **Vedic Literature** **सत्रान्त परीक्षा -70**
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section – A) संहिता
खण्ड- ख (Section – B) ब्राह्मणग्रन्थ और यज्ञ
खण्ड- ग (Section – C) मुण्डकोपनिषद्

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक रचनाओं के विभिन्न पक्षों से अवगत कराना है। वैदिक संहिताएँ कैसे नैतिकमूल्यों और मानवता का पाठ पढ़ाती है। मुण्डकोपनिषद् इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी पढ़ सकेंगे कि वेदान्त के प्रारम्भिक बिन्दुओं का यहाँ कितनी सुन्दरता से प्रतिपादन है। यज्ञों के महत्त्व से भी परिचय करवाया गया है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र वैदिक आध्यात्मिक ज्ञान से ओतप्रोत हो मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य के लिए जागरूक हो सकता है।
2. पारिवारिक और सामाजिक साम्मनस्य का पाठ पढ़ कर अपनेभावी जीवन को उन्नत एवं सुखी कर सकता है।
3. यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण शुद्धि के महत्त्व को समझना सुगम होगा।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)
संहिता

घटक(Unit)-1 ऋग्वेद- अग्निसूक्त- 1.1, अक्ष सूक्त 10.34, हिरण्यगर्भ सूक्त- 10.121, संगठनसूक्त 10.191
घटक(Unit)-2 यजुर्वेद - शिवसंकल्पसूक्त- 6-34.1
घटक(Unit)-3 अथर्ववेद- सांमनस्य सूक्त, - 3.30, भूमि सूक्त- 12.1.1-12, ब्रहचर्य सूक्त 11.5.1-10 मन्त्र

खण्ड-ख (Section – B)
ब्राह्मणग्रन्थ और यज्ञ

घटक(Unit)1-ब्राह्मणग्रन्थ का अर्थ, स्वरूप एवं प्रतिपाद्य
घटक(Unit) 2- प्रमुख ब्राह्मणग्रन्थों का परिचय (ऐतरेय, शतपथ, षड्विंश एवं गोपथब्राह्मण)
घटक(Unit) 3-पञ्चमहायज्ञों का सामान्यपरिचय
घटक(Unit) 4- पर्यावरण एवं यज्ञ

खण्ड-ग (Section –C)
मुण्डकोपनिषद्

घटक (Unit)1 मुण्डकोपनिषद् - 1.1-2.1
घटक (Unit) 2 मुण्डकोपनिषद् - 2.2-3.2

1. ऋग्वेदसंहिता (सायणाचार्यकृत भाष्य औरहिन्दी व्याख्या सहित), (संस्करण) रामगोविन्दत्रिवेदी, चौखम्बा संस्कृत भाषा, दिल्ली।

2. अथर्ववेद (शौनकेय): (सं।) विश्व बंधु, वीवीआरआई, होशियारपुर, 1960।
3. शुक्लयुजीवसंहिता , (पदपथ, उव्वत - जीवधर भाष्य संवलित तत्त्वबोधिनी हिंदी सहित), (संस्करण) रामकृष्ण शास्त्री, चौखम्बा संस्कृत भाषा, दिल्ली।
4. शतपथ ब्राह्मण, (सं।) गंगा प्रसाद उपाध्याय, एसएलबीएसआरएस विद्यापीठ, दिल्ली।
5. शुकुलाजुर्वेद-संहिता, (वाजसनेयी-मध्यनदिना), (सं।) जगदीश लाल शास्त्री, एमएलबीडी, दिल्ली, 1978।
6 .मुण्डकोपनिषद् (शामुक्करभाष्य), (संस्करण) जियाल काम्बोज, ईस्टना बुक लिंकेर्स, दिल्ली।
7 .वैदिक संग्रह,कृष्णलाल,ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली.
8. रिक्सुक्तावाली, एच। डी। वेलणकर, वैदिक संसोधन मंडला, पुणे, 1965। 9. रिकसुकतावेजयन्ती, एचवेलंकर .डी., भारतीय विद्या भवन, बॉम्बे, 1972। 10. ऋक्सूक्तनिकर, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा ओरियंटल, वाराणसी।
9.वेद का राष्ट्रीय गीत , आचार्य प्रियव्रत , गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
10 . ब्रह्मचर्य के गीत , आचार्य अभयदेव विद्यालङ्कार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

नोटसंसाधन की सिफारिश करने के लिए स्वतंत्र हैं।-ई / लेखों / यदि आवश्यक हो तो शिक्षक किसी भी प्रासंगिक पुस्तकों :

UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-पञ्चम (Semester –V)

आधारभूत पत्र (Core paper) संस्कृत व्याकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी) **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code HSA– C512 **Sanskrit Grammar** **सत्रान्त परीक्षा -70**

(Laghusiddhantakaumudi) **आन्तरिक परीक्षा-30**

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section – A) संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

खण्ड-ख (Section – B) समास प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

खण्ड-ग (Section – C) कृदन्त प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत भाषा के संरचनात्मक वैशिष्ट्यसे परिचित कराना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत के व्याकरण का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त कर पद एवं वाक्य संरचना करने में दक्ष हो सकता है।
2. संस्कृतव्याकरण इस भाषा के ज्ञान के लिए मूलस्रोत है, इसकेसम्यक् परिज्ञानसे समस्त साहित्य कागम्भीर अध्ययन करना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)

संज्ञा एवं सन्धि प्रकरण

(लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

घटक (Unit)1- संज्ञा एवं अच् सन्धि प्रकरण के सूत्रार्थ एवं प्रयोग (यण्, गुण, अयादि, वृद्धि एवं पूर्वरूप)

घटक (Unit)2- हल् सन्धि एवं विसर्गसन्धिके सूत्रार्थ एवं प्रयोग
(श्चुत्व, ष्टुत्व, अनुनासिकत्व, छत्व, जश्त्व, षत्व, उत्व एवं लोप)

घटक (Unit)3- संस्कृत साहित्य में संधियों के प्रयोग का अभ्यास

खण्ड-ख (Section – B)

समास

(लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

घटक (Unit)1-अव्ययीभाव एवं तत्पुरुष समास विधायक प्रमुख सूत्रों के अर्थ एवं प्रयोग।

घटक (Unit)–2- द्वन्द्व एवं बहुव्रीहि समास विधायकप्रमुख सूत्रों के अर्थ एवं प्रयोग।

खण्ड-ग (Section –C)

कृदन्त प्रकरण (लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार)

घटक (Unit)1- कृदन्त शब्द विधायक प्रमुख प्रत्यय (तव्यत्, तव्य, अनीयर्, यत्, ण्वुल्, तृच्, अण्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तुमुन्, क्त्वा (ल्यप्), ल्युट्) तथा इनके सूत्र।

संस्तुतग्रन्थाः

1.शास्त्री धरानन्द – लघुसिद्धान्तकौमुदी , मूल एवं हिन्दी व्याख्या , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. शास्त्री भीमसेन – लघुसिद्धान्तकौमुदी , भैमी व्याख्या (भाग – 1-4) भैमीप्रकाशन , दिल्ली

निम्न वैकल्पिक पत्रों में से कोई दो पत्र छात्र पढेंगे

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृतपाठ्यक्रम
Detail of the Elective Course for Sanskrit
सत्र- पञ्चम (Semester –V)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र (DSE-Paper)
Paper Code:HSA-E511

तर्क एवं वादविवाद की भारतीय पद्धति
Indian System of Logic and Debate

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section- A) वादविवादविज्ञान के मूलतत्त्व
खण्ड- ख (Section-B) न्यायबद्ध तर्क
खण्ड-ग (Section-C) वाद-विवाद के सिद्धान्त

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम छात्रों को भारतीय तर्क वितर्क के सिद्धान्तों और उसके सम प्रयोग से परिचित कराता है। इसका उद्देश्य केवल दार्शनिक विचार विमर्श का परिचय देना ही नहीं है, अपितु ज्ञान के प्रत्येक पहलू को समझाना है। यह पाठ्यक्रम केवल छात्रों की दैशिक युक्तियों को ही आगे नहीं लाता, अपितु यह उनकी बौद्धिक क्षमता को भी विकसित करता है, ताकि वे अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में संसार को और अधिक गम्भीरता से समझ सकें।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों में तर्कणा शक्ति का विकास होगा। सत्य असत्य को समझने में सहायता मिलेगी।
2. कोई छात्र **LLB/LLM** करना चाहे तो इस पाठ्यक्रम से विशेष लाभ प्राप्त कर सकता है।
3. तर्क की तुला पर तौल कर लौकिक व्यवहार को करने में समर्थ होगा।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
वादविवादविज्ञान के मूलतत्त्व

घटक-क (Unit-1) अन्वेषण-विज्ञान (आन्वीक्षिकी) एवं इसका महत्त्व, वादविवाद की कला के रूप में आन्वीक्षिकी का विकास, वाद-विवाद की परिषद् तथा इसके प्रकार, (वादी-प्रतिवादी) , न्यायाधीश (मध्यस्थ/प्राश्निक)

घटक-ख (Unit-2) वाद-विवाद की पद्धति (सम्भाषाविधि/वादविधि) तथा उसकी उपयोगिता, वादविवाद के प्रकार- सौहार्दपूर्ण वादविवाद (अनुलोम सम्भाषा) तथा शत्रुतापूर्ण वादविवाद (विगृह सम्भाषा), वादोपाय तथा वादमर्यादा ।

नोट : न्यायसूत्र, न्यायकोष (भीमाचार्य झल्कीकार) तथा ए0 सी0 विद्याभूषण द्वारा रचित A History Of Indian Logic के Chapter III के Section I के आधार पर उक्त की परिभाषा एवं अवधारणा पढाई जायेगी।

खण्ड –ख (Section–B)

न्यायबद्ध तर्क

घटक-क (Unit-1) अनुमान प्रमाण के लक्षण तथा इसमें प्रयुक्त शब्दावली - साध्य, हेतु, पक्ष, सपक्ष, विपक्ष, व्याप्ति और इसके प्रकार तथा उपाधि । तर्क का स्वरूप एवं प्रकार तथा पञ्चावयव (प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय , निगमन)।

नोट- तर्क संग्रह के आधार पर

खण्ड–ग (Section–C)

वाद-विवाद के सिद्धान्त

घटक (Unit) 1–दृष्टान्त, सिद्धान्त, निर्णय, कथन और उसके प्रकार, वाद, जल्प, वितण्डा तथा इनका ज्ञान

घटक (Unit) 2- छल एवं उसके प्रकार, जाति और इसके महत्त्वपूर्ण प्रकार (साधर्म्यसम, वैधर्म्यसम, उत्कर्षसम और अपकर्षसम), निग्रहस्थान और इसके प्रकार- प्रतिज्ञाहानि, प्रतिज्ञान्तर, प्रतिज्ञाविरोध, प्रतिज्ञासंन्यास, मतानुज्ञा ।

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. Vidyabhushan,SatishChandra,*AHistoryofIndianLogic*,MLBD,Delhi,1962. (ChapterIIIofSectionI&ChapterIIofSectionIIonly)
2. Potter, karlH., Encyclopedia of Indian Philosophies, Vol. II,Motilal Banarsidass, Delhi,1977.
3. Jhalkikar,Bhimacharya,*Nyāyakośaḥ*,BhandarkarOrientalResearchInstitute, Poona, 1997 (reprint of fourthedition)
4. Athalye&Bodas, *Tarkasaṅgraha*, Mumbai, 1920. (only introduction & exposition of*anumāna*)
5. SHSAtri,Kuppuswami, *A Primer of Indian Logic*, Madras, 1951 (only introduction & exposition of*anumāna*) .
6. TarkasaṁgrahaofAnnaṁbhaṭ a(withDipika) ,(Ed.&Tr.inHindi) ,Kanshiram& Sandhya Rathore, MLBD, Delhi2007.
7. Bagchi,S.S.–*InductiveLogic:ACriticalStudyofTarka&ItsRoleinIndian Logic*, Darbhanga,1951.
8. Chatterjee, S. C. & D. M. Datta - *Introduction to Indian Philosophy*, Calcutta University, Calcutta, 1968 (Hindi Translationalso)
9. Chatterjee,S.C.–*TheNyāyaTheoryofKnowledge*,Calcutta,1968.
10. Hiriyanna, M. - *Outline of Indian Philosophy*, London, 1956 (also Hindi Translation) .
11. Jha, Harimohan – BhāratīyaDarśanaParicaya, Vol. I (NyāyaDarśana) , Darbhanga.
12. Matilal,B.K. –*TheCharacterofLogicinIndia*,Oxford,1998.
13. Radhakrishnan,S.-*IndianPhilosophy*,OxfordUniversityPress,Delhi,1990

संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Elective Course for Sanskrit
सत्र- पञ्चम (Semester –V)

विषय सम्बद्ध वैकल्पिक पत्र
(DSE- Paper)
Paper Code HSA-E512

सन्तुलित जीवन की कला
Art of Balanced Living

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section-A) आत्मप्रस्तुति
खण्ड-ख (Section-B) एकाग्रता
खण्ड-ग (Section-C) व्यवहार का परिष्करण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य संस्कृत साहित्य में छात्रों को सुरक्षित जीवन जीने की पद्धतियों के विविध सिद्धान्तों से परिचित कराना है और उन्नत जीवन के लिए उन सिद्धान्तों के उपयोग की कला सिखाना है। साथ ही साथ यह पाठ्यक्रम छात्रों को प्रेरित करता है कि उत्तम परिणामों के लिए वे मानव संसाधनों का समुचित प्रबन्धन कैसे कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रआजीवनउन्नत मनःस्थिति के साथ विना किसी द्वन्द्व के जी पायेगा।
2. अपने लौकिक जीवन में विविध संकटों से आपन्न होने पर भी हीनभावना से ग्रसित नहीं होगा तथा आत्महत्या जैसे कुकृत्य करने का विचार तक नहीं कर सकेगा।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

आत्मप्रस्तुति

घटक-क (Unit-1) आत्मप्रस्तुति की विधि: श्रवण, मनन और निदिध्यासन (बृहदारण्यकोपनिषद् 2.4.5)

खण्ड –ख (Section–B)

एकाग्रता

घटक-क (Unit-1) योग की अवधारणा: (योगसूत्र, 1.2)
अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा आवेश पर नियन्त्रण: (योगसूत्र 1.12-16)
अष्टाङ्ग योग (योगसूत्र 2.29, 30,32, 46, 49, 50 तथा 3.1-4)।
क्रियायोग: (योगसूत्र 2.1)
मानसिक स्वास्थ्य के चार विशिष्ट साधन (चित्तप्रसाधन) एकत्व की ओर अग्रसरण (योगसूत्र 1.33)

खण्ड–ग (Section–C)

व्यवहार का परिष्करण

घटक-क(Unit-1) व्यवहार परिष्करण की विधि: ज्ञान-योग, ध्यान-योग, कर्म-योग और भक्ति-योग (विशेषकर कर्म-योग) कर्म के प्राकृतिक आवेग, जीवन यात्रा के लिए कर्म की आवश्यकता, कर्म के द्वारा संसार में समन्वय, आदर्श कर्त्तव्य और तत्त्वमीमांसा सम्बन्धी निर्देश (गीता, 3.5, 8, 10-16, 20,21)

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. बृहदारण्यकोपनिषद् , गीताप्रेस गोरखपुर
2. योगसूत्र , पातंजल योगप्रदीप , गीताप्रेस गोरखपुर
4.श्रीमद्भगवद्गीता गीताप्रेस गोरखपुर,
5. श्रीमद्भगवद्गीता , सामर्पणभाष्य , राधेलाल एंड संस चैरिटेबल ट्रस्ट, कचहरी रोड, मेरठ

विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृत विषयक विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Elective Course for Sanskrit

सत्र- पञ्चम (Semester –V)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र
(DSE- Paper)
Paper Code HSA-E513

संस्कृत में रंगमञ्च और नाट्यकला
Theatre and Dramaturgy in Sanskrit

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section- A) रंगमञ्च : प्रकार और निर्माण

खण्ड-ख (Section-B) नाट्य : वस्तु, नेता और रस

खण्ड-ग (Section-C) भारतीय रंगमञ्च की परम्परा और इतिहास

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

नाटक श्रव्य और दृश्य होने के कारण मनोरञ्जन की सभी विधाओं में सर्वोत्तम माना गया है। नाट्यशाला)Theater का (इतिहास भारत में बहुत पुराना है, जिसकी एक झलक ऋग्वेद के सम्वाद सूक्तों में देखी जा सकती है। बाद में नाट्यशास्त्र भरतमुनि के द्वारा विकसित किया गया। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य नाट्य-सौन्दर्य को पहचानना है और भारतीय नाट्य शास्त्र के शास्त्रीय पक्ष के विकास से छात्रों को परिचित कराना है

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रभारतीय नाट्य के विविध पक्षों, आयामों को गहराई से हृदयंगम कर पायेगा।
2. यदि कोई नाट्यकला में प्रवीण छात्र आधुनिक रंगमञ्च के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहे तो उसके लिए यह पाठ्यक्रम नींव का पत्थरबन सकता है।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

रंगमंच: प्रकार और निर्माण

घटक-क(Unit-1) रंगमंच: प्रकार और निर्माण -विकृष्ट (आयताकार), चतुरस्र (वर्गाकार) , त्र्यस्र (त्रिकोणीय), ज्येष्ठ (दीर्घ), मध्यम, अवर (छोटा), भूमिशोधन, माप, मत्तवारणी (स्तम्भ) , रङ्गपीठ, रङ्गशीर्ष, दारुकर्म , नेपथ्यगृह, प्रेक्षकोपवेश (प्रेक्षागृह), प्रवेश और निर्गम द्वार।

खण्ड –ख (Section–B)

नाट्य : वस्तु, नेता और रस

घटक-क (Unit-1) नाट्य की परिभाषा एवं इसके विभिन्न नाम - दृश्य, रूप, रूपक, अभिनय और प्रकार : आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य । वस्तु और उसके प्रकार (आधिकारिक, प्रासङ्गिक), पञ्च अर्थ प्रकृतियाँ, पञ्च कार्यावस्थाएँ एवं पञ्च सन्धि तथा अर्थोपक्षेपक । संवाद के प्रकार- सर्वश्राव्य (प्रकाश्य), अश्राव्य अथवा स्वगत, नियतश्राव्य, जनान्तिक, अपवारित, आकाशभाषित।

घटक-ख (Unit-2) नेता: चार प्रकार के नायक, तीन प्रकार की नायिकाएँ, सूत्रधार, पारिपार्श्विक, विदूषक, कञ्चुकी, प्रतिनायक।

घटक-ग (Unit-3) रस की परिभाषा, रस-निष्पत्ति के अवयव: भाव, विभाव, अनुभाव, सात्विकभाव, स्थायीभाव, व्यभिचारिभाव, स्वाद। चार प्रकार के मानसिक स्तर: विकास, विस्तार, क्षोभ, विक्षेप।

खण्ड–ग (Section–C)

भारतीय रंगमंच की परम्परा और इतिहास

घटक-क) Unit-1) रंगमंच की उत्पत्ति और विकास: वैदिक युग, महाकाव्य-पौराणिक युग, राज दरबार रंगमंच (court theatre), मन्दिर रंगमंच, खुला रंगमंच, आधुनिक रंगमंच, लोक रंगमंच, व्यावसायिक रंगमंच।

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. Ghosh , M.M. - Nātyaśāstra of Bharatamuni, pp. 18-32.
2. झा सीताराम, (1982) नाटक और रंगमंच, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, पृ. 171-175.
3. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārika 7,8,11-24,30,36,43,48,57-65.
4. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārikās 2/1-5,8,9,15.
5. HSAs , The Daśarūpak: A Treatise on Hindu Dramaturgy, kārikās 4/1-8,43,44.
6. त्रिपाठी, राधावल्लभ (सं0) संक्षिप्त नाट्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2008

विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृत विषयक विस्तृतपाठ्यक्रम

Detail of the Elective Course for Sanskrit

सत्र- पञ्चम (Semester –V)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र	**संगणकीय संस्कृत भाषा के लिए**	**पूर्णाङ्क -100**
(DSE- Paper)	**उपकरण और तकनीक**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA-E514	**Tools and Techniques for**	**आन्तरिक परीक्षा-30**
	Computing Sanskrit Language	**सकल-अर्जिताधिभार 06**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क (Section- A) संस्कृत और भाषा संगणना (Computing)

खण्ड- ख (Section-B) भाषा संगणना (Computing) पद्धति और सर्वेक्षण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

संस्कृत में कम्प्यूटिंग के विकास और वर्तमान में चल रहे शोध का परिचय इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों तक पहुँचाना है। साथ ही सरकारी एवं प्राइवेट वित्तपोषण के अधीन विकसित तकनीक और उपकरणों पर प्रमुखता से जोर दिया जाएगा ताकि संस्कृत के लिए नई तकनीकिओं का अन्वेषण किया जा सके।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रकम्प्यूटर के क्षेत्र में हो रही प्रगति से अद्यतन हो सकेगा।
2. भाषा की दृष्टि से संस्कृत का व्याकरण कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयोगी है, अतः संस्कृत छात्र **आई टी कम्पनियों** के साथ मिलकर भाषा से सम्बन्धित शोध कार्यों को मूर्त रूप देने में सहायक हो सकेगा।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

संस्कृत और भाषा संगणना (Computing)

घटक-क (Unit-1) संस्कृत स्वरविज्ञान, संस्कृत आकृतिविज्ञान, वाक्यरचना, शब्दार्थ, शब्दकोश, समूह (corpora)

घटक-ख (Unit-2) परिचय, उद्देश्य, उपकरण, तकनीक,संस्कृत भाषा के स्त्रोत एवं उपकरणविधि।

खण्ड –ख (Section–B)

भाषा संगणना (Computing) पद्धति और सर्वेक्षण

घटक-क (Unit-1) नियम आधार, सांख्यिकीय और मिश्रित (Hybrid हाइब्रिड)

घटक-ख (Unit-2) भाषा संगणना (कम्प्यूटिंग) सर्वेक्षण

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. Akshar Bharati, Vineet Chaitanya and RajeevaSanghal, Natural Language Processing:APaninianProspective,PrenticeHallofIndia,NewDelhi,1995.
2. Jha, Girish Nath, Morphology of Sanskrit Case Affixes: A Computational Analysis, M.Phil Dissertation, Centre of English and Linguistics, School of Language, Literature and Culture Studies, JNU,1993.
3. SubHSAh Chandra, Computer Processing of Sanskrit NominalInflections:Methods and Implementation.Cambridge Scholars Publishing (CSP) , 2011.
4. GirishNathJha,MadhavGopal,DiwakarMishra,AnnotatingSanskritCorpus: AdaptingIL-POSTS,HumanLanguageTechnology.ChallengesforComputer Science and Linguistics Lecture Notes in Computer Science Volume 6562, 2011, pp371-379.
5. Teachers Notes andHandout.
6. E-contents suggested byteachers.
7. Various Materials fromInternet
8. Daniel Jurafsky and James H. Martin, Speech and Language Processing, Prentice Hall; 2008ToolsdevelopedbyComputationalLinguisticsGroup,DepartmentofSanskrit, UniversityofDelhi,Delhi-110007availableat:http://sanskrit.du.ac.in

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र-षष्ठ (Semester –VI)

आधारभूत पत्र (Core paper) | **सत्तामीमांसा और ज्ञानमीमांसा** | **पूर्णाङ्क -100**
Paper Code – HSA-C611 | **Ontology and Epistemology** | **सत्रान्त परीक्षा -70**
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section – A) भारतीय दर्शन के मूलतत्त्व
खण्ड- ख (Section – B) सत्तामीमांसा (तर्कसंग्रह के आधार पर)
खण्ड- ग (Section – C) ज्ञानमीमांसा (तर्कसंग्रह के आधार पर)

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पाठ्यक्रम का मुख्य प्रयोजन न्याय वैशेषिक दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों को तर्कसंग्रह के माध्यम से छात्रों को अवगत कराना है। यह विद्यार्थियों में संस्कृत के दार्शनिक सिद्धान्तों को समझने की योग्यता प्रदान करता है। संक्षेप में भारतीय दर्शन के मुख्य पक्षों को समझने में सहायता करना ही इस पाठ्यक्रम का एकमात्र उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र भारतीय दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तों को जान पायेगा।
2. उक्त के माध्यम से मुख्य चेतन तत्त्व ही सर्वत्र व्याप्त है- यह जानकर जीवन में अहङ्कार से मुक्त हो कर व्यवहार करने से सुखी रह पायेगा।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड-क (Section – A)
भारतीय दर्शन के मूलतत्त्व

घटक (Unit)1- दर्शन का अर्थ और उद्देश्य तथा भारतीय दर्शन की विभिन्न शाखाएँ
घटक (Unit)–2 अद्वैतवाद (एकत्ववाद), द्वैतवाद और त्रैतवाद
घटक (Unit)–2 कार्यकारणवाद, सत्कार्यवाद, विवर्तवाद तथा परिणामवाद के सिद्धान्त

खण्ड- ख (Section – B)
सत्तामीमांसा (तर्कसंग्रह के आधार पर)

घटक (Unit)1- पदार्थ की स्वरूप एवं भेद
घटक (Unit)–2 द्रव्य का स्वरूप एवं भेद
घटक (Unit)–4 पञ्चकर्म

खण्ड- ग (Section –C)
ज्ञानमीमांसा (तर्कसंग्रह के आधार पर)

घटक (Unit) 1- न्याय दर्शन के अनुसार ज्ञान का स्वरूप एवं भेद। वैशेषिक दर्शन के अनुसार स्मृति, यथार्थ एवं अयथार्थ अनुभव।
घटक (Unit)–2 कारण और करण परिभाषाएँ और प्रकार।
घटक (Unit)–2 प्रमाणों का स्वरूप एवं भेद

अनुशंसित पुस्तकें/ रीडिंग:

1. इंडियन लॉजिक, कुप्पुस्वामी शास्त्री, मद्रास, 1951 के एक प्राइमर।
2. अन्नमभट्ट का तर्पणसंघ (दीपिका और न्याबोधिनी के साथ), (सं। और त्र।) अथाली और बोडास, मुंबई, 1 9 30।
3. अन्नमभट्ट का तर्पणसंघ (दीपिका और न्याबोधिनी के साथ), (सं। और त्रि।) विरुपक्षानंद, श्री रामकृष्ण नाथ, मद्रास, 1 99 4।
4. अन्नामभट्ट की तर्कासंगरा (हिंदी अनुवाद के साथ दीपिका टिप्पणी के साथ), (एड एंड ट्र), पंकज कुमार मिश्रा, परिमल प्रकाशन, दिल्ली -7। 2013।
5. तर्कसंगराह, नरेंद्र कुमार, हंसा प्रकाशन, जयपुर।
6. चटर्जी, एस। सी। एंड डी। एम। दत्ता - भारतीय दर्शन का परिचय, कलकत्ताउन्नता, कलकत्ता, 1968 (हिंदी अनुवाद भी)।
7. चटर्जी, एस। सी। - ज्ञान का सिद्धांत, कलकत्ता, 1968।
8. हिरियाना, एम। - भारतीय दर्शन की रूपरेखा, लंदन, 1956 (हिंदी अनुवाद भी)।

9. राधाकृष्णन, एस। भारतीय दर्शन -, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1990।
10. चटर्जी, एसभारतीय दर्शन का परिचय :और .सी., कलकत्ता
11. डी(भारतीय दशान - हिंदी) दत्त .एम. 12. भट्टाचार्य, चंद्रोदय, द एलीमेंट्स ऑफ इंडियन लॉजिक एंड एपिस्टेमोलॉजी,
13. मैत्रा, एस।, भारतीय तत्वमीमांसा और तर्कशास्त्र के मौलिक प्रश्न

नोट: यदि आवश्यक हो तो शिक्षक किसी भी प्रासंगिक पुस्तकों / लेखों / ई-संसाधन की सिफारिश करने के लिए स्वतंत्र हैं।

PROPOSED UNDER GRADUATE COURSES FOR SANSKRIT (HON.) UNDER CHOICE BASED CREDIT SYSTEM (CBCS)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)

संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम

Detail of the Core Course for Sanskrit

सत्र-षष्ठ (Semester –VI)

आधारभूत पत्र (Core paper) संस्कृत लेखन एवं सम्प्रेषण **पूर्णाङ्क -100**

Paper Code – HSA-C612 **Sanskrit composition and communication** **सत्रान्त परीक्षा -70**

आन्तरिक परीक्षा-30

सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)

खण्ड-क(Section – A) विभक्त्यर्थ, वाच्य एवं कृत् प्रत्यय

खण्ड- ख(Section – B) अनुवाद एवं सम्प्रेषण

खण्ड- ग(Section – C)) निबन्ध

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

इस पत्र का उद्देश्य लघुसिद्धान्तकौमुदी के विभक्त्यर्थ-प्रकरण के माध्यम से वाक्य-संरचना और उससे सम्बन्धित अन्य जानकारियाँ देना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्र संस्कृत की वाक्य संरचना करने में दक्ष हो सकता है।
2. संस्कृतभाषा के विभिन्न प्रत्ययों के परिज्ञान सेछात्र लोकव्यवहार में साधु शब्दों कोप्रयोग करने में सिद्धहस्त हो संस्कृतवाणी में वाक् चातुर्य को प्राप्त कर सकता है।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड- (Section – A)

विभक्त्यर्थ, वाच्य एवं कृत् प्रत्यय

घटक (Unit)1-(क) लघुसिद्धान्त कौमुदी के आधार पर विभक्त्यर्थ प्रकरण

(ख) वाच्य (कर्तृ, कर्म एवं भाववाच्य)

घटक (Unit)–2 लघुसिद्धान्त कौमुदी के कृत् प्रकरण में से कृदन्त शब्दरूप निर्माण हेतु प्रमुख सूत्रों का अध्ययन

(तव्यत् , तव्य, अनीयर, यत्, ण्यत्, ण्वुल्, तृच्, अण्, क्त, क्तवतु, शतृ, शानच्, तुमुन्, क्त्वा, ल्यप्, ल्युट्, घञ्, क्तिन्)

खण्ड- (Section – B)

अनुवाद एवं सम्प्रेषण

घटक (Unit)1-(क) कारक, समास एवं कृत् प्रत्ययों पर आधृत हिन्दी के पाँच वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

(ख) संस्कृत गद्यखण्ड का हिन्दी में अनुवाद

घटक (Unit) 2–सम्प्रेषणात्मक संस्कृत : संभाषणीयसंस्कृत (दैनन्दिन व्यवहार योग्य दस हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद)

खण्ड- (Section –C)

निबन्ध

घटक (Unit)1-पारम्परिक विषयों पर आधृत निबन्ध : वेद, उपनिषद्, संस्कृत भाषा , संस्कृति, रामायण, महाभारत, पुराण, गीता तथा प्रमुखसंस्कृत कवि।

संस्तुतग्रन्था:

1.शास्त्री धरानन्द – लघुसिद्धान्तकौमुदी , मूल एवं हिन्दी व्याख्या , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. शास्त्री भीमसेन – लघुसिद्धान्तकौमुदी , भैमी व्याख्या (भाग – 1) भैमीप्रकाशन , दिल्ली
3. नौटियाल चक्रधर – बृहद् अनुवाद चन्द्रिका , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
4.द्विवेदी कपिलदेव – रचानानुवादकौमुदी , विश्वविद्यालयप्रकाशन, वाराणसी
5. द्विवेदी कपिलदेव – संस्कृतनिबन्धशतकम्, विश्वविद्यालयप्रकाशन, वाराणसी
6.V.S. - छात्रों को संस्कृत रचना, चौखम्बा संस्कृत श्रृंखला, वाराणसी के लिए गाइड।(हिंदी अनुवाद भी उपलब्ध है)
7. काले, एमउच्च संस्कृत व्याकरण -.आर., MLBD, दिल्ली।(हिंदी अनुवाद भी उपलब्ध)

नोट: यदि आवश्यक हो तो शिक्षक किसी भी प्रासंगिक पुस्तकों / लेखों / ई-संसाधन की सिफारिश करने के लिए स्वतंत्र हैं।

विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- षष्ठ (Semester –VI)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र **संस्कृत भाषाविज्ञान** **पूर्णाङ्क -100**
(DSE- Paper) **सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA-E611 **आन्तरिक परीक्षा-30**
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section- A) संस्कृतभाषाशास्त्र

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम छात्र को संस्कृतभाषा का भाषाविज्ञान की दृष्टि से क्या महत्त्व है? इसका परिज्ञान करवाता है। विभिन्न भाषाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का परिचयभी यह देता है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्रभाषाशास्त्रमें गहन चिन्तन की प्रवृत्ति से संवलित होगा।
2. भाषाओं का आपसी तालमेल है, एक दूसरे से सब परिवार की तरह जुड़ी हैं -इसकी समझ विकसित होगी और भाषाजन्यआपसी विद्वेष से भी छुटकारा प्राप्त होगा।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)

संस्कृतभाषाशास्त्र

घटक-क (Unit-1) भाषा का स्वरूप, परिभाषा, भाषा की विविधताएँ, भाषाविज्ञान का स्वरूप, भाषाविज्ञान के मुख्य अंग एवं उपादेयता।

घटक-ख (Unit-2) संस्कृत की दृष्टि से ध्वनिविज्ञान, पदविज्ञान, वाक्यविज्ञान एवं अर्थविज्ञान का समन्वय अवबोध।

घटक-ग (Unit-3) संस्कृत एवं भारोपीय भाषापरिवार।

घटक-घ (Unit-4) संस्कृत एवं तुलनात्मक भाषाविज्ञान के इतिहास का सामान्य परिचय।

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. तिवारी, भोलानाथ , तुलनात्मक भाषाविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974.
2. तिवारी, भोलानाथ, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1992.
3. द्विवेदी, कपिलदेव, भाषाविज्ञान एव भाषाशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2001.
4. शर्मा, देवेन्द्रनाथ, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2014
5. व्यास, भोलाशंकर, संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन, चौखम्बा विद्याभवन, 1957.
1. Burrow,T.,SanskritLanguage(alsotrans.intoHindibyBholashankarVyas) , ChaukhambaVidyaBhawan,

Varanasi,1991.
2. Crystal,David,TheCambridgeEncyclopediaofLanguage,Cambridge,1997.
Ghosh, B.K., Linguistic Introduction to Sanskrit, Sanskrit Pustak Bhandar,Calcutta,1977.
4. Gune, P.D., Introduction to Comparative Philology, Chaukhamba Sanskrit Pratisthan, Delhi,2005.
5. Jesperson,Otto,Language:ItsNature,DevelopmentandOrigin,GeorgeAllen & Unwin, London,1954.
6. Murti, M., An Introduction to Sanskrit Linguistics, D.K. Srimannarayana, Publication, Delhi,1984.
7. TaraporewaIa,ElementsoftheScienceofLanguage,CalcuttaUniversityPress, Calcutta,1962.
8. Verma, S.K., Modern Linguistics, Oxford University Press,Delhi,
Woolner,A.C.,IntroductiontoPrakrit,BhartiyaVidyaPrakashan,Varanasi.

विद्यालङ्कार (B.A. SANSKRIT HONS.) संस्कृत विषय के लिये CBCS आधृत विस्तृत पाठ्यक्रम
विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- षष्ठ (Semester –VI)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र	**आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्त**	**पूर्णाङ्क -100**
(DSE- Paper)	**Fundamentals of Aayurveda**	**सत्रान्त परीक्षा -70**
Paper Code HSA-E613		**आन्तरिक परीक्षा-30**
		सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड-क (Section- A) आयुर्वेद का परिचय
खण्ड-ख (Section-B) चरकसंहिता (सूत्रस्थान)
खण्ड-ग (Section- C) योगशतम्

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

5000 वर्ष ईस्वी पूर्व में अन्वेषित की गई स्वास्थ्य संरक्षण की भारतीय परम्परा, जिसे कि हम आयुर्वेद के नाम से जानते हैं, स्वास्थ्य संरक्षण की पद्धतियों में महत्त्वपूर्ण है। कक्षा में दिए गए व्याख्यानों और चर्चा के माध्यम से यह पाठ्यक्रम छात्रों को आयुर्वेद के सिद्धान्तों का परिचय देगा। आयुर्वेद के सिद्धान्तों को इस पाठ्यक्रम में जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, वे विद्यार्थियों के लिए उनके दिन प्रतिदिन के जीवन हेतु पूर्ण, व्यापक और उपयोगी हैं। इस पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आयुर्वेद के मौलिक सिद्धान्तों और औषधीय निवारक उपाय तथा स्वास्थ्य संरक्षण एवं आहार और पोषण के साथ-साथ आयुर्वैदिक चिकित्सकीय प्रक्रिया में सामान्य रूप से प्रयुक्त मसालों एवं जड़ी बूटियों तथा आयुर्वैदिक रूपरेखा को प्रत्यक्ष रूप देना है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्रशारीरिक एवं मानसिक रूपेण स्वस्थ रहने के लिए अधीतविद्य हो जायेंगे।
2. क्या खाद्य है और क्या अखाद्य?इसका पूर्ण परिज्ञान होने एवं जीवन में धारण करने से कदाचित् ही रोगी होंगे।
3. तैत्तिरीयोनिषद् के अध्ययन से प्राचीन शिक्षा के महत्त्व से परिचित हो अध्यात्मशील भी होंगे।

घटकानुरूप विभाजन (Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
आयुर्वेद का परिचय

घटक-क (Unit-1) आयुर्वेद का परिचय, चरक से पूर्व भारतीय चिकित्सा का इतिहास, आयुर्वेद के दो सम्प्रदाय: धन्वन्तरि और पुनर्वसु।

घटक-ख (Unit-2) आयुर्वेद के मुख्य आचार्य:चरक, सुश्रुत, बाग्भट्ट, माधव, शारङ्गधर, भावमिश्र।

खण्ड – ख (Section–B)
चरकसंहिता (सूत्रस्थान)

घटक-क (Unit-1) षड् ऋतुओं - हेमन्त, शिशिर, वसन्त,ग्रीष्म,वर्षा, शरद में शरीर और प्रकृति की स्थिति तथा पथ्यापथ्य।

खण्ड – ग (Section–C)
योगशतम् (1-50 श्लोक)

सत्र 2019-20 से प्रभावी

घटक-क (Unit-1) योगशतम् (1-25 श्लोक), लेखक- अमित प्रभाचार्य (प्रकाशक, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार)
घटक-ख (Unit-1) योगशतम् (26-50 श्लोक), लेखक- अमित प्रभाचार्य (प्रकाशक, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार)

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. Brahmananda Tripathi (Ed.) , Carakasamhitā, ChaukhambaSurbharatiPrakashana, Varanasi,2005.
2. Taittiriyopanisad–Bhiguvalli.
3. AtridevVidyalankar, Ayurveda ka BrhaditiHSAa.
4. Priyavrat Sharma, CarakaChintana.V.Narayanaswami,OriginandDevelopmentofĀyurveda(Abriefhistory) ,Ancient Science of life, Vol. 1, No. 1, July 1981, pages1-7.

5.योगशतम्, लेखक- अमित प्रभाचार्य (प्रकाशक, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार)

विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र हेतु संस्कृतविषयक विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Elective Course for Sanskrit
सत्र- षष्ठ (Semester –VI)

विषयसम्बद्ध वैकल्पिक पत्र
(DSE- Paper)
Paper Code - HSA-E614

संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता
Environmental Awareness in Sanskrit literature

पूर्णाङ्क -100
सत्रान्त परीक्षा -70
आन्तरिक परीक्षा-30
सकल-अर्जिताधिभार 06

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section- A) पर्यावरण की दृष्टि से संस्कृत साहित्य की महत्ता
खण्ड- ख (Section-B) वैदिक साहित्य में पर्यावरण जागरूकता
खण्ड- ग (Section- C) लौकिकसंस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

प्रत्येक देश की राष्ट्रीय संस्कृति का आधार उसका पर्यावरण, जलवायु और प्राकृतिक स्रोत जैसे संसाधनों के साथ मानवीय व्यवहार पर आधारित होता है। संस्कृत भाषा भारत की संस्कृति और सभ्यता का वाहन है। संस्कृत साहित्य में प्रतिपादित प्रकृति पर आधारित एवं पर्यावरण के अनुकूल विचार, अनन्त काल से जनमानस की सेवा कर रहे हैं। प्राचीन भारत में सम्भवतः धर्म शब्द प्रकृति के संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के लिए प्रयोग किया जाता था। इसीलिए संस्कृत साहित्य न केवल हमारे लिए महत् उपकारी है, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए उसका उतना ही मूल्य है। इस पाठ्यक्रम का प्रयोजन भी यही है कि छात्र भारतीय पर्यावरण विज्ञान और उसके मुख्य वैशिष्ट्य के साथ पर्यावरण जागृति से जुड़ सकें जैसा कि वैदिक और शास्त्रीय संस्कृत में इसका स्वरूप है।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस के अध्ययन से छात्र पर्यावरण प्रदूषण के वास्तविक अर्थ से परिचित होगा।वर्तमान में प्रवर्धमान अनेकविध भौतिक, सामाजिक, धार्मिक दूषणों से निश्चयेन बच सकेगा।
2. समस्त प्रदूषणों का मूल वैचारिक दूषण है, इसकी समझ, जागरूकता आने पर कोई भीसमाज, देश और विश्व स्वयमेव पर्यावरण की दृष्टि से स्वस्थ होना सम्भव है।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड – क (Section–A)
पर्यावरण की दृष्टि से संस्कृत साहित्य की महत्ता

घटक-क (Unit-1) पर्यावरण का अर्थ और परिभाषा, मानवसभ्यता में पर्यावरण की भूमिका, पर्यावरण विज्ञान के विभिन्न नाम : पारिस्थितिकी, पर्यावरण, प्रकृति-विज्ञान, पर्यावरण के मुख्य घटक-जीव-जगत् और भौतिक पदार्थ। पर्यावरणीय भौतिक तत्त्वों के प्राथमिक कारक- जैविक तत्त्व और सांस्कृतिक तत्त्व।

घटक-ख (Unit-2) पर्यावरण की आधुनिक चुनौतियां और संकट :- ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन, ओजोन की कमी, प्रदूषण में वृद्धि, भूमिगत जल स्तर में ह्रास, नदी प्रदूषण, बड़े पैमाने पर वनों की कटाई। प्राकृतिक आपदाएँ जैसे- बाढ़, भूकम्प, सूखा आदि।

घटक-ग (Unit-3) संस्कृत साहित्य की पर्यावरणीय पृष्ठभूमि : पर्यावरण विज्ञान के दृष्टिकोण से संस्कृत साहित्य का महत्व, वैदिक साहित्य में मातृ-भूमि की अवधारणा और प्राकृतिक-तत्त्वो के प्रति दैवीभाव। पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय- जैसेकि यज्ञ, प्रकृति माँ की सुरक्षा और संरक्षण, जंगलों में पेड़ लगाना और संस्कृत साहित्य में प्रस्तावित जल संरक्षण तकनीक। पेड़ों की सुरक्षा, जानवरों और पक्षियों के प्रति स्नेह।

खण्ड – ख (Section–B)

वैदिक साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

घटक-क (Unit-1) वैदिक साहित्य में पर्यावरण-स्वरूप, वैदिक साहित्य में प्रकृति के प्रति दैवीभाव, ब्रह्माण्ड की सभी प्राकृतिक शक्तियों के मध्य समन्वय, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के पर्यावरण के लिए मार्गदर्शक शक्ति के रूप में ब्रह्माण्डीय व्यवस्था ऋत (ऋग्वेद, 10.85.1) अथर्ववेद में पर्यावरण के लिए समकक्ष शब्द : वृतावृता (12.1.52) , अभीवार, (1.32.4 , आवृत्त (10.1.30) , परिवृत (10.8.31) ; पर्यावरण द्वारा आच्छादित ब्रह्माण्ड के पांच मूल तत्व : पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश (ऐतरेय उपनिषद 3.3) ; पर्यावरण के तीन घटक तत्त्व, जिन्हें छन्दांसि के रूप में जाना जाता है: जल, वायु और औषधि।(अथर्ववेद, 18.1.17) ; पाँच रूपों में जल के प्राकृतिक स्रोत : वर्षा जल (दिव्य), स्रवन्ती (प्राकृतिक झरना) , कुएँ और खनित्रिमा (नहर)) , स्वयंजाः (झीलें) और समुद्रियः आपः नदियाँ (समुद्रिय:),ऋग्वेद, 7.49.2।

घटक-ख (Unit-2) वैदिक साहित्य में पर्यावरण संरक्षण: पर्यावरण संरक्षण के पाँच प्राथमिक स्रोत: पर्वत (पर्वत) , सोम (जल) , वायु (वायु) , पर्जन्य (वर्षा) और अग्नि (अथर्ववेद, 3.21.10) ; सूर्य से पर्यावरण संरक्षण (ऋग्वेद, 1.191.1-16), अथर्ववेद, 2.32.1-6, यजुर्वेद, 4.4.,10.6) ; जीवन के अनुकूल वातावरण हेतु उत्पन्न जड़ी बूटी एवं पौधों का समूह, (अथर्ववेद, 5.28.5), महत् उल्व (ओजोन परत) की वैदिक अवधारणा (ऋग्वेद 10.51.1), अथर्ववेद (4.2.8) वैश्विक पारिस्थितिकी-तन्त्र के संरक्षण के लिए पौधों और जानवरों का महत्त्व, (यजुर्वेद 13.37) उपनिषदों में पर्यावरण के अनुकूल पर्यावरणीय जीव (बृहदारण्यक उपनिषद, 3.9.28, तैत्तिरीय उपनिषद, 5.101, ईशो0 उपनिषद, 1.1)

खण्ड – ग (Section–C)

लौकिक संस्कृत साहित्य में पर्यावरण जागरूकता

घटक-क (Unit-1) पर्यावरण जागरूकता और वृक्षारोपण : पुराणों में एक पवित्र गतिविधि के रूप में वृक्षारोपण (मत्स्य पुराण; 59.159; 153.512; वराहपुराण (172. 39), राजा द्वारा वन में विविध औषधीय पादपों का रोपना, (शुक्रनीति- 4.58-62) (अर्थशास्त्र, 2.1.20) पेड़ों और पौधों को नष्ट करने पर दण्डविधान (अर्थशास्त्र, 3.19) , भूजल के पुनर्भरण के लिए वृक्षों का रोपण (बृहत् संहिता 54.119)

घटक-ख (Unit-2) पर्यावरण जागरूकता और जल प्रबन्धन :- सिंचाई के लिए विभिन्न प्रकार की नहरें (कुलया) : नहर-नदी से उत्पन्न नहरें (नदीमातृमुखाकुल्या), पर्वत से उत्पन्न नहरें (पर्वतपार्श्ववर्तिनीकुल्या), ह्रद से उत्पन्न नहरें (ह्रदसूताकुल्या), जल-स्रोतों का संरक्षण वापी-कूप-तड़ाग (अग्निपुराण, 209.2, रामायण, 2.80.10-11) ; अर्थशास्त्र में जल संचयन प्रणाली (2.1.20-21) ; बृहत्संहिता में भूमिगत जल विज्ञान (उदकार्गालीय अध्याय 54)

घटक-ग (Unit-3) कालिदास के साहित्य में सार्वभौमिक पर्यावरणीय चेतना

अनुशंसित ग्रन्थ(Suggested Books/Readings)

1. ArtHSAHSAtra of Kautilya—(ed.) Kangale, R.P. Delhi, Motilal Banarasidas 1965
2. Atharvaveda samhita.(2 Vols — (Trans.) R.T.H. Griffith, Banaras 1968.
3. Ramayana of Valmaki (3 Vols) — (Eng. Tr.) H.P. SHSAtri, London, 1952-59.
4. Rgvedasamhita (6 Vols) — (Eng. Tr.) H.H. Wilson, Bangalore, 1946.
5.Bhandarkar,RG— Vaishnavism, Saivism and Minor Religious Systems, Indological Book House, Varanasi, 1965
6. Das Gupta, SP— Environmental Issues for the 21st Century, Amittal Publications, New Delhi, 2003
7. Dwivedi, OP, Tiwari BH — Environmental Crisis and Hindu Religion, Gitanjali Publishing House, New Delhi,1987
8. Dwivedi, OP — The Essence of the Vedas, Visva Bharati Research Institute, Gyanpur, Varanasi ,1990
9. Jernes, H (ed.) —Encyclopedia of Religion and Ethics (Vol. II) , New York: Charles Szcribmer Sons, 1958.
10. Joshi, PC, Namita J—A Textbook of Environmental Science, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2009
11. Sinha, KR) — Ecosystem Preservation Through Faith and Tradition in India. J. Hum. Ecol., Delhi University, New Delhi, 1991
12. Trivedi, PR—Environmental Pollution and Control, A.P.H. Publishing Corporation, New Delhi, 2004
13. Pandya,SmtaP. — Ecological Renditions in the Scriptures of Hinduism – I (article) Bulletin of the Ramakrishna Mission Institute of Culture.

14. Renugadevi, R. —Environmental Ethics in the Hindu Vedas and Puranas in India, (article) African Journal of History and Culture , Vol. 4(1) , January 2012
15. Kumar, B M. — Forestry in Ancient India: Some Literary Evidences on Productive and Protective Aspects, (article) AsianAgri- History,
16. Vol.12, No.4, 2008.
17. Kiostermair,Klaus—Ecology and Religion: Christian and Hindu Paradigms (article) Jornal of Hindu-Christian Studies, Butler university Libraries, Vol.6,1993